—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्रॉफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
[illegible] लखनऊ

जून, 2006 वर्ष 5 अंक 04

आचरण का महत्व

ईमान में वही परिपूर्ण है, जिस के आचरण उत्तम हैं।

(हदीस)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना ख़रीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

इस्लाम में औरत का मर्तबा	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
नमाज़.......	मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी	9
सीरतुन्नबी	अल्लामा शिब्ली नोमानी	11
अख़लाकी इमारत की बुन्यादें	मौ० मु० राबे हसनी नदवी	13
संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	15
खुदा और रसूल (स०) की महब्बत	मौ० अब्दुल्लाह हसनी	18
गैर मुस्लिम पाठकों से अनुरोध	इदारा	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	21
क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही	मुहम्मद कुत्ब	22
मदीने सर के बल जाना	मौ० मुहम्मद सानी हसनी	24
इस्लामी समाज की चित्रकारी	मु० जसीमुद्दीन कासिमी	25
आम	इदारा	26
मुसलमान सारी दुन्या के लिए रहमत	सईद अहमद अकबराबादी	27
भलाई के कामों में मदद करना	अब्दुर्रशीद खैरानी	28
दीन	डा० अब्दुल्लतीफ	29
मानवता का सन्देश	अबू मर्गूब	30
ऐसे होते थे पहले के टीचर्स	एम० हसन अन्सारी	33
दीनी तअलीम और रोजी	अब्दुस्सलाम कासिमी	34
मां बाप का हक	सुरैया खानम	36
रामायन और महाभारत	इतिहास के पन्नों से	37
खरबूजा तरबूज	इदारा	39
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

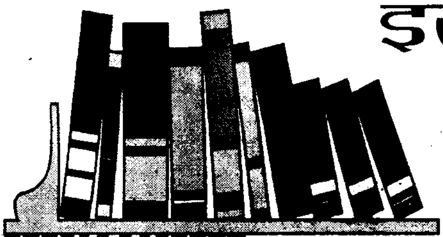

इस्लाम में औरत का मर्तबा

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

हाँ एक ज़माना था जब लड़की ज़िन्दा दफ़्न कर दी जाया करती थी, कोई भाई नहीं चाहता था कि उसकी बहन का कोई शौहर बने और वह उसका साला कहलाए, कोई बाप नहीं पसन्द करता था कि उसकी बेटी को कोई पैग़ाम देकर उसे शर्मिन्दा करे। ह़द हो गई थी बेअ़क्ली की वह नहीं सोचते थे कि खुद उनका वजूद कैसे हुआ है। एक सहाबी ने अपनी जिहालत के ज़माने का अपना वाक़िआ यूँ बयान किया :

मेरी एक छोटी सी बच्ची थी मेरी और उसकी मां की फ़ित्री महब्बत ने उसे ज़िन्दा रहने दिया यहाँ तक कि वह चलने फिरने और दौड़ने लगी, मीठी मीठी बातें करने लगी, लेकिन अफ़सोस एक रोज़ मेरी जिहालत की ग़ैरत मुझ पर ग़ालिब आ गई, मैं एक लड़की का बाप हूँ? मैं किसी को दामाद बनाऊंगा? ऐसा नहीं हो सकता। पस मैंने एक कुदाल ली, बच्ची को साथ लिया और सहरा (रेगिस्तानी जंगल) की तरफ़ चल दिया, दूर जाकर एक गड्ढा खोदने लगा, बच्ची पूछने लगी अब्बू आप गड्ढा क्यों खोद रहे हैं? अब्बू आपके कपड़े गन्दे हो रहे हैं। लेकिन मैं चुपचाप गड्ढा खोदता रहा यहाँ तक कि गड्ढा दफ़्न के क़ाबिल हो गया फिर मैंने उस बच्ची को उस गड्ढे में गिराकर भारी भारी पत्थर उस पर डालने लगा बच्ची रोती और सबब पूछती रही मगर मैं पागल सा था, मेरे घर में बच्ची पलेगी? वह चीख़ती रही मैं पत्थर डालता रहा, यहाँ तक कि बच्ची भी नज़रों से ओझल हो गई और उसकी आवाज़ भी ख़ामोश हो गई। यह वाक़िआ बयान करते हुए सहाबी भी ख़ूब रोए और ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दाढ़ी भीग गई। (रिवायत बिलमअ़ना)

क़ुर्आने मजीद में इसी बारे में आया है :– "व इज़ल्मवऊदतु सुइलत् बिअय्यि ज़ंबिन् क़ुतिलत्" और जब (ह़श्र के मैदान में जहाँ दुन्यावी ज़िन्दगी का ह़िसाब किताब हो रहा होगा) ज़िन्दा गाड़ दी गई बच्ची से पूछा जाएगा कि वह किस गुनाह में क़त्ल की गई? (पवित्र कुर्आन ८१:८,९) फिर वह बच्ची बताएगी कि मेरे भाई या बाप ने इसलिये मुझे ज़िन्दा गाड़ दिया था कि मैं लड़की थी।

लेकिन जब इस्लाम का दौर आया तो न सिर्फ़ उन बच्चियों को ज़िन्दा रहने का ह़क़ ह़ासिल हुआ बल्कि वह परवरिश करने वालों की उख़रवी तरक़्क़ी का सबब बनी, बताया गया जिसके एक बच्ची हो और वह उसकी अच्छी परवरिश करे फिर जब बालिग़ हो जाए उसका निकाह़ कर दे तो उसके लिये जन्नत की ख़ुशख़बरी है। फिर क्या था बच्ची पलने लगी, भाई का प्यार, बाप का लाड और माँ की शफ़क़त पाने लगी और फिर इस दर्जे को पहुंची कि ह़ज़रत फ़ातिमा जब तशरीफ़ लातीं तो ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्ते महब्बत में खड़े हो जाते।

तमाम आ़लम के पैदा करने वाले रब्बुल्आ़लमीन ने औ़रतों के मरतबे से नावाकिफ़ जाहिलों को अव्वलन इस्लाम की तौफ़ीक़ दी फिर इस सिन्फ़े नाज़ुक (मृदुल जाति) को वह मक़ाम दिया जिस पर वह आज फ़ाइज़ है। आज दीनदार शरीफ़ घरानों में बच्चियों को जो दर्जा ह़ासिल है बच्चा उसे देखकर ह़सद नहीं रश्क करता है, उसके ख़ूबसूरत लिबास, फिर उस पर सुबुक ज़ेवरात,

माँ या बहन की जानिब से कंघी चोटी उसकी तअ़लीम व तर्बियत, भाई अपनी बहन से कैसा पुरखुलूस प्यार करता है, माँ बाप उसका कितना ख़याल फ़रमाते हैं, लड़की बड़ी हो जाती है, जवान हो जाती है उस में फ़ित्री हया और फ़ित्री ख़्वाहिश पैदा होती है कि कोई गैर मर्द उसे न देखे न किसी ग़ैर मर्द को वह देखे इसलिये कि इस देखने में जिन्सी मह़ब्बत लाज़िमी है और जिन्सी मह़ब्बत ग़लत रास्ते पर ले जाती है। पैदा करने वाला तो इन्सान की फ़ित्री (प्राकृतिक) ख़्वाहिशात और फ़ित्री कमज़ोरियों से वाक़िफ़ है उसने अपने मह़बूब नबी को ह़ुक्म दिया कि :–

आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिये कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्म गाहों की हिफ़ाज़त करें यह उनके लिये ज़ियादा सफ़ाई की बात है, बेशक अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर है जो कुछ लोग किया करेते हैं। (पवित्र क़ुर्आन २४:३०)

इस आयत में मर्दों को औ़रतों के मुक़ाबले में निगाह नीची रखने का ह़ुक्म दिया यअ़नी नामह़रम औ़रतों को बिना शरई़ ज़रूरत के देखने से रोक दिया। आगे फ़रमाया :

और आप मुसलमान औ़रतों से कह दीज़िये कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी ज़ीनत (श्रंगार) के मवाक़िओं (जगहों अर्थात अंगों) को ज़ाहिर न करें सिवा उसके जो खुला रहता है (अर्थात जिसके खुले रहने में मजबूरी है) और अपने दूपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें, और अपनी ज़ीनत (मर्दों पर) न ज़ाहिर किया करें सिवाए (इन वर्णित लोगों के अर्थात) अपने शैहरों या अपने बाप अपने शैहरों के बाप (अर्थात सुसर), अपनी औलाद (सन्तान) अपने शौहरों की औलाद (अर्थात सौतेली औलाद), अपने भाई, अपने भाईयों की औलाद, अपनी बहन की औलाद, या अपनी औ़रते (अर्थात मुस्लिम औ़रतें) या अपनी बान्दियां या बेरग़बत वाले ख़ादिम या वह बच्चे जो अभी औ़रतों के पर्दों की बातों से ना वाक़िफ़ (अपरिचित) हों (इन सब से पर्दा नहीं है।) और धमक कर पैर न रखें कि जिससे छुपे ज़ेवर ज़ाहिर हो जाएं, और तुम सब (औ़रत मर्द) अल्लाह के सामने तौबा करो ताकि कामयाब (सफल) हो जाओ। (पवित्र क़ुर्आन २४:३२)

यह वह फ़ित्री अह़काम हैं जिनकी एक शरीफ़ औ़रत तमन्ना करती है, इन अह़काम के आते ही शरीफ़ औ़रतों को सुकून मिल गया रहा आज़ाद औ़रतों का इश्काल तो उनके इश्काल (आपत्ति) का ह़ल दुन्या के फ़ासिद ह़ालात बताएंगे या अह़कमुल ह़ाकिमीन की गिरिफ़्त।

बेशक औ़रतों का कफ़ील, अल्लाह तआ़ला ने, मर्दों को बनाया, कितने सुकून की बात है कि औ़रत को अपनी रोज़ी की फ़िक्र नहीं करना है उसके रहने खाने कपड़े की ज़िम्मेदारी शौहर पर है। फिर औ़रत का काम क्या है? औ़रत का काम अपने शौहर की मदद करना और अपने बच्चों की तर्बियत करना है, हैसियत के लिहाज़ से वह अपने घरेलू इन्तिज़ामात की सुपरवाइज़र भी है और अपना घर संभालने वाली भी और अपने बच्चों की टीचर भी और उनको तर्बियत देने वाली भी। इसके साथ–साथ उख़रवी ज़िन्दगी में मर्दों के मुक़ाबले में मह़रूम नहीं की गई अल्लाह तआला फरमाते हैं :

और जो कोई नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत बशर्ते कि मोमिन हो, सो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।" (पवित्र कुर्आन ४:१२४)

ग़रज़ कि इस्लाम ने एक शरीफ़ औ़रत को जो मर्तबा दिया है उसकी मिसाल किसी और कानून या ज़ाब्ते में मिल नहीं सकती।

कुरआन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

खुदा की सिफ़ात

ख़ुदा की हस्ती का इल्म तो इन्सानो के लिये एक विजदानी, फितरी और बदीही इल्म (स्वाभाविक एवं प्राकृतिक ज्ञान) है। अर्थात् सिर्फ़ इतनी सीधी सी हक़ीक़त कि हमारा और इस संसार का कोई पैदा करने वाला और चलाने वाला है। हर आदमी के लिये यह बात उतनी ही रोशन और उतनी ही यक़ीनी है जितनी कि उसकी नज़र में खुद अपनी हस्ती और अपना वजूद ..लेकिन आगे यह बात कि वह हस्ती कैसी है और उसकी सिफ़ात (गुण) क्या हैं, (हालांकि इस बात का जानना हमारे लिये ज़रूरी है क्योंकि उसके बग़ैर न खुदा की मारिफ़त (ज्ञान) हासिल हो सकती है और न हम उसके साथ अपने सम्बन्ध की स्थिति को जान सकते हैं) लेकिन इन्सान अपने तौर पर इसको जान नहीं सकता..इसलिये इन्सान के लिये जिन चीज़ों का जानना ज़रूरी है और जिनका सही इल्म (ज्ञान) हासिल करने में वह अल्लाह के पैग़म्बरों और अल्लाह की किताबों की रहनुमाई (मार्गदर्शन) का मोहताज है, उनमें से एक 'अल्लाह की सिफ़तों' का मस्अला भी है।

नुजूले—कुरआन (कुरआन के उतारे जाने) के वक़्त ख़ुदा की हस्ती का अक़ीदा (विश्वास) तो क़रीब—क़रीब सब क़ौमों में और सब धर्मों में मौजूद था, लेकिन उसकी सिफ़ात का सही तसव्वुर (ख़्याल) कहीं भी नहीं था, और इस बारे में दुनिया बड़ी—बड़ी गलतियों और गुमराहियों (भूल भटक) में पड़ गई थी। उस वक्त के बड़े—बड़े मज़हब (धर्म) और उनकी मानने वाली कौमें और उनकी बुन्यादी (मूल) किताबें आज भी मौजूद हैं, या कम से कम उनके बारे में गवाही देने वाली तारीख़ (इतिहास) मौजूद है। थोड़ा सा वक़्त और थोड़ी सी मेहनत सर्फ़ करके देखा जा सकता है कि ख़ुदा के मुतालिक उनके ख़्यालात (विचार) कितने ग़लत और कितने गिरे हुये थे, और उन धर्मों या फ़लसफ़ों के मानने वाले जों अब तक संसार में मौजूद हैं, वे खुदा की सिफ़ात (गुणों) के बारे में कैसी—कैसी गुमराहियों में आज तक भी पड़े हुये हैं। बहर—हाल कुरआने—मजीद ने अपनी दावतं—व—तालीम (शिक्षा) के ज़रिये क़ौमों और धर्मों की जिन संगीन (भयानक) ग़लतियों की सुधारणा की है, उनमें एक ख़ुदा की सिफ़ात की बात भी है।

कुरआने—मजीद ने इस बारे में जो कुछ दुनिया को बताया है उसकी सही क़द्रो—क़ीमत (मूल्य—महत्व) जानने के लिये बल्कि उसको समझने के लिये भी कम से कम इजमालन (संक्षेप में) ही यह मालूम होना ज़रूरी है कि दुनिया की क़ौमें कुरआन के नाज़िल होने के वक़्त में, ख़ुदा की सिफ़ात के बारे में कैसी ग़लत फ़हमियों (भ्रान्तियों) और गुमराहियों (भूल—भटक) में मुबतिला थीं और ख़ुदा को कैसा समझते थे। इसकी तफ़सील तो उन धर्मों के इतिहास से सम्बन्धित किताबों ही में देखी जा सकती है। यहाँ तो हम बस उन चंद उसूली (मूल) गुमराहियों का ज़िक्र करते हैं, जिनमें नुजूले—कुर्आन (कुरआन के उतरने) के वक़्त, ख़ुदा की मानने वाली दुन्या आम तौर से मुबतिला थी।

बहुत सी क़ौमें इस दुनिया को एक ख़ुदा की पैदा की हुयी दुनिया मानने के बावजूद इस वहम में पड़ी हुई थीं कि जिस तरह दुनिया में एक बादशाह या राजा होता है, लेकिन देश और शासन के काम ज़ियादातर वह ख़ुद नहीं करता, बल्कि उसके वज़ीर और दूसरे अधीनस्थ करते हैं, और जिस तरह चाहते हैं करते हैं, उसी तरह ख़ुदा का भी मामला है कि इस दुन्या में जो कुछ होता है वह सब बराहे—रास्त (प्रत्यक्ष रूप से) ख़ुदा ख़ुद नहीं करता, बल्कि उसकी मुक़र्रब (निकटतम) कुछ अन्य रूहानी (आध्यात्मिक) हस्तियाँ (जैसे देवी देवता आदि) है, जिनको ख़ुदा ने बहुत से काम और बहुत से इख़तियार दे रखे हैं और उन कामों को वही अंजाम देते हैं वे जिससे राज़ी हों उसे खुशहाल कर देते हैं और जिससे नाराज़ हों उसे तबाह व बरबाद (नष्ट) कर देते हैं, और इसीलिये लोगों की भलाई या बुराई का सम्बंध अमली तौर पर (व्यावहारिक रूप से) उन ही देवियों

देवतासओं की ख़ुशी या नाख़ुशी से है।

इसी तरह की गुमराहियों (भूलों) में से एक यह भी थी कि जिस तरह दुनिया के बादशाहों राजों–महाराजों का यह हाल होता है कि कुछ लोगों से रिश्तेदारी का या प्यार–व–मुहब्बत का ऐसा ताल्लुक होता है कि वे उनकी किसी इच्छा और किसी सिफ़ारिश (संस्तुति) और किसी बात को रद (नकार) नहीं कर सकते बल्कि जो वह चाहें वही करना पड़ता है। इसी तरह मआज़ल्लाह (अल्लाह की पनाह) ख़ुदा का भी कुछ ख़ास हस्तियों से ऐसा सम्बंध है कि जो वे ख़ुदा से कराना चाहें वह ख़ुदा को मजबूरन (चाहे–अनचाहे) करना ही पड़ता है।

कुछ क़ौमों की गुमराही यह थी कि वे ख़ुदा का तसव्वुर (कल्पना) उसके माद्दी (भौतिक) शक्लो–सूरत और (भौतिक) सिफ़ात (विशेषताओं) के साथ करती थीं, और समझती थीं कि जैसे दुख–सुख आदि तबअ़ी (प्राकृतिक) हालात जो इन्सानों पर आते हैं, यह सब ख़ुदा पर भी आते हैं और इन्सानों पर इन हालात के जो असरात (प्रभाव) पड़ते हैं वही ख़ुदा पर भी पड़ते हैं, और इन्सान इन हालात का असर लेकर जैसे काम करता है वैसे ही काम अल्लाह–तआला भी करता है।

आम मुशरिक और बुतपरस्त क़ौमों के ख़यालात (विचार) ख़ुदा के बारे में कुछ ऐसे ही थे, और उनके शिर्क की बुनियाद इन्हीं ग़लत और गुमराही वाले ख़यालात पर थी। इनके अलावा कुछ क़ौमें ख़ुदा को क़हरो–गज़ब (प्रकोप) और जलालो–जबरुत (प्रताप) से भरपूर एक ऐसे बादशाह की तरह समझती थीं जिसका कोई उसूल (सिद्धान्त) और कानून न हो और जो गुस्से और नाराज़गी के वक़्त अपने ग़ैज़ो–ग़ज़ब (प्रकोप) की तस्कीन (तृप्ति) के लिये लोगों पर बेहिसाब तबाहियाँ और बरबादियाँ (कठोरतम दण्ड) नाज़िल करता हो और रहम और दरगुज़र (माफ़ी) से उसकी फ़ितरत (स्वभाव) ख़ाली हो।

अगर ग़ौर से देखा जाये तो इन सब गुमराहियों की, बल्कि इनके अलावा और भी जो गुमराहियाँ ख़ुदा की सिफ़ात के बारे में क़ौमों और धर्मों में थीं (इसी तरह जो आज भी हैं) इन सबकी या कम से कम इनमें से अक्सर (अधिकतर) की जड़ एवं बुनियाद सिर्फ यह है कि दुनया की नज़र में सबसे बड़ी चीज़ बादशाही थी, और सबसे बड़ी हस्तियाँ बादशाहों की थीं, इसलिये जो बातें और जो गुण बादशाहों में होते थे उन ही को ज़ियादा बड़े और ऊँचे पैमाने पर ख़ुदा में मान लिया गया था।

अल्लाह को बादशाह समझने के इस मुग़ालते (ग़लती) ही का यह नतीजा था कि ख़ुदा का तसव्वुर आ़म तौर से बस क़हरो–गज़ब और जलालो–जबरूत (क्रोध) ही के साथ किया जाता था और उसको दहशत (भय) और ख़ौफ़ ही की चीज़ समझा जाता था और उससे बस डरा ही जाता था।

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने नुज़ूले कुरआन से कई सदियों पहले इसी ग़लती के सुधार के लिये अल्लाह तआ़ला की सिफ़ते–रहमत (दया की विशेषता) पर अधिक ज़ोर दिया और उसको समझाने के लिये (ईसा के इंजील से मालूम होता है) बाप की मुहब्बत व शफ़क़्क़त (प्रेम) की मिसालों (उदाहरण) से काम लिया, लेकिन कुछ समय के बाद उनकी मानने वाली उम्मत की कजरवी (टेढ़ेपन) ने इसी से इबनियत और कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) के अक़ीदे पैदा कर लिये। बहरहाल मसीही उम्मत (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयाई) में इबनियत और क़फ़्फ़ारे के अक़ीदे ख़ुदा की सिफ़ात के ग़लत तसव्वुर ही से पैदा हुये।

अलग़रज़ ख़ुदा की सिफ़ात के बारे में इस तरह की ग़लतियों और गुमराहियों में नुज़ूले–कुरआन के वक़्त दुन्या की आ़म क़ौमें और उम्मतें मुब्तला (लिप्त) थीं। अब ज़रा देखिये कि कुरआन ने आ कर इस बारे में दुन्या को क्या बतलाया। सूरए फ़ातिहा, जिससे कुरआने–मजीद शुरू होता है; इसमें सबसे पहले ख़ुदा की सिफ़ात की पहचान इस तरह कराई गयी है :–

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अर्रहमानिर्रहीम. मालिकि यौमिद्दीन.

तर्जुमा :– सारी हम्द (तारीफ़) और सताइश (प्रशंसा) उस अल्लाह ही के लिये है जो सारी काइनात (संसार) का पालनहार है। बड़ा रहम करने वाला और बड़ा मेहरबान (दयालु) है। जज़ा (प्रतिफल) और इन्साफ़ के दिन का मालिक है।

पहली सिफ़त ''रब्बिल आ़लमीन'' ने यह बतलाया कि काइनात (सृष्टि) के साथ ख़ुदा का ताल्लुक सिर्फ़ यह नहीं है कि वह इसका ख़ालिक़ और पैदा करने वाला है, बल्कि पैदा होने के बाद जिसको जो कुछ भी मिल रहा है और जिस तरह भी उसका

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

रास्ता चलने वालों को तक्लीफ़ से बचाने का सवाब

एक रिवायत में है कि एक आदमी जा रहा था, रास्ते में पेड़ की एक शाख थी। कहा, खुदा की क़सम मैं इससे मुसलमानों को ज़रूर नजात दूंगा। ताकि उनको तकलीफ़ न हो, पस वह जन्नत में दाखिल हुआ। और एक रिवायत में है कि एक आदमी रास्ता तय कर रहा था, रास्ते में एक काँटे भरी शाख़ नज़र आयी। उसको हटाया, अल्लाह तआ़ला ने उसके काम को पसन्द फ़रमाया और उसको बख़्श दिया।

नमाज़ जुमा की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करके जुमा की जमात में शरीक हो और ख़ामोशी के साथ ध्यान लगाकर (पहले खुत्बा) सुने तो जो उसके और (पिछले) जुमा के दर्मियान गुनाह हुए हैं बख़्श दिये जायेंगे और तीन दिन मज़ीद। और जिसने कंकरियों से खेला उसने लग्व काम किया। (मुस्लिम)

वुज़ू का असर

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सललल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान बन्दः या मोमिद बन्दः बुज़ू करता है, जब अपने चेहरे को धोता है तो उसके चेहरे से उसकी तमाम खताएं दूर हो जाती है। जिनको अपनी आँखों से देखा है, पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ, फिर हाथों को धोता है तो उसके हाथों से तमाम गुनाह निकल जाते हैं जिनका उसने इर्तिकाब किया है। पानी के साथ या पानी के आखिरी क़तरे के साथ, फिर जब अपने पांव धोता है तो पांव की तमाम खताएं दूर हो जाती हैं। पानी के साथ या पानी के आखिरी क़तरे के साथ, यहाँ तक कि तमाम गुनाहों से पाक हो जाता है। (मुस्लिम)

नमाज़ पंजगाना जुमा व रमज़ान की तासीर

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया पाँच वक़्त की नमाज़ में और जुमा–जुमा तक, रमज़ान–रमज़ान तक दर्मियान के तमाम गुनाहों को बिल्कुल मिटा देने वाला है, अगर बड़े गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम)

सरहद की हिफ़ाज़त

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुमको ऐसी बात की ख़बर दूँ जिसकी वजह से अल्लाह तआ़ला ख़ताओं को मिटा देगा और दर्जा बुलन्द करेगा। उन्होंने कहा, हाँ या रसूलल्लाह् फ़रमाया, तकलीफ़ के वक़्त पूरा–पूरा वज़ू करो और मस्जिद की तरफ़ क़दमों की ज़ियादती करो, और नमाज़ का इन्तिजार–नमाज़ के बाद यह सरहद की हिफ़ाज़त है। (मुस्लिम)

सुबह व शाम की नमाज़

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो सुबह व शाम नमाज़ पढ़ेगा वह जन्नत में दाखिल होगा।

बीमारी में अमल का सवाब

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब बन्दः बीमार हो या सफ़र में हो तो उसके लिए वही अमल लिखा जायेगा जो क़ियाम और तन्दुरुस्ती की हालत में करता था। (बुखारी)

हर नेकी सदक़ः है

हज़रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर नेकी सदक़ः है। (बुखारी)

दरख़्त लगाने की फ़ज़ीलत

हज़रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान कोई पौदा लगाये और उससे लोग फ़ायदः उठाये तो उसके लिए सदक़ः है और अगर चोरी जाये या उसको कोई नुक़्सान पहुंचाये तो भी उसके लिए सदक़ः है। (बुखारी)

और एक रिवायत में है कि मुसलमान दरख़्त लगाये उससे इन्सान और जानवर फ़ायदः उठायें उसके लिए क़ियामत तक सदक़ः जारी रहेगा।

मस्जिद में दूर से आने की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू मूसा अश्अरी (र०) से रिवायत है कि बनी सल्मः ने मस्जिद के क़रीब घर बनाने का इरादः किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खबर पहुँची। आपने उनसे फ़रमाया कि मुझको खबर पहुंची है कि तुम मस्जिद के क़रीब रहने का इरादः करते हो। उन्होंने कहा हाँ, या रसूलुल्लाह! हमने इसका इरादः किया है। आपने फ़रमाया, ऐ बनी सल्मः! अपने घरों को न छोड़ो, तुम्हारे सब नक्शे क़दम लिखे जायेंगे; अपने घरों को न छोड़ो, तुम्हारे सब नक्शे क़दम लिखे जायेंगे।

हज़रत अबू मुन्ज़िर उबई बिन कअ़ब (र०) से रिवायत है कि एक आदमी का घर मस्जिद से बहुत फ़ासले पर था ऐसा किसी का न था। उसकी कोई नमाज़ जमाअ़त से फ़ौत न होती थी। उससे किसी ने कहा या मैंने ही कहा, कि एक गधा खरीद लो उस पर रात की तारीकियों में और दिन की तपती रेत में आया–जाया करो। कहा, मैं ऐसे घर से खुश नहीं होता जो मस्जिद के पहलू में हो। मैं चाहता हूँ कि मस्जिद की तरफ़ मेरा आना और घर कीतरफ़ मेरा पलट जाना लिखा जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने तुम्हारे लिए सब जमा कर दिया है।

सवाब की उम्मीद और अल्लाह के वादों का यक़ीन छोटे अमल को बलनद कर देता है

हज़रत अब्दुल्लाह इब्नि अम्र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, चालीस बातें हैं उनमें खूबी की बात बकरी का अतीयः है। जो शख्स भी इन ख़सलतों पर सवाब की उम्मीद में और जिसका वादा किया गया है उसकी तस्दीक़ में अमल करेगा। अल्लाह तआ़ला उसके ज़रीये उसको जन्नत में दाखिल करेगा। (बुखारी)

एक खजूर का टुकड़ा भी जहननम् से हिजाब बन सकता है

हज़रत अ़दी बिन हातिम (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, फ़रमाते थे कि (दोज़ख की) आग से बचो अगरचि एक खजूर का टुकड़ा ही देकर। (बुख़री–मुस्लिम)

हज़रत अदी बिन हातिम (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अनकरीब क़ियामत के दिन हर शख़्स से उसका परवरदिगार बातें करेगा, इसके और उसके दर्मियान कोई तर्जुमान न होगा, अपनी सीधी तरफ़ देखेगा तो वही देखेगा जो उसने आगे भेजा है। और जब अपनी बाई जानिब देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो उसने आगे भेजा है। और जब अपने सामने देखेगा तो (दोज़ख की) आग को देखेगा जो उसके चेहरे के सामने होगी; तो आग से बचो अगरचि एक खजूर के टुकड़े ही से क्यों न हो।

खाने-पीने पर अल्लाह का शुक्र

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुललाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि हर मुसलमान को सदक़ः देना लाज़िम है। कहा, अगर इस्तिताअ़त न हो तो आप क्या फ़रमाते हैं? फ़रमाया, अपने हाथ से काम करे, अपने को भी नफ़ः पहुंचाये और सदक़ः भी करे। कहा अगर इसकी भी इस्तिताअ़त न हो? फ़रमाया, हाजतमन्द और मुसीबतज़दः की मदद करे। कहा, अगर यह भी न कर सके? फ़रमाया, नेकी का हुक्म दे। कहा अगर इसकी भी इस्तिताअ़त न हो? फ़रमाया, तो अपने को बुराइयों से बचाये, यह भी सदक़ः है। (बुखारी, मुस्लिम)

ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

(पृष्ठ ६ का शेष)

पालन–पोषण हो रहा है वह सब बराहे–रास्त (प्रत्यक्ष रूप से) उसी (अल्लाह) की तरफ़ से है। वही सबकी तर्बियत (शिक्षा–दीक्षा) और पालन पोषण कर रहा है। यहाँ तक कि दरख़्तों को बज़ाहिर हवा पानी और ज़मीन से जो ग़िज़ा मिलती है जिससे उनकी हयात (ज़िन्दगी) और उनका नशोनुमा (विकास) है; और बच्चों को माँ के पिस्तानों से जो दूध मिलता है, तो वह सब भी हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला ही की रूबूबियत (पालन–पोषण की क्षमता) है और असल देने वाला वही है। मतलब यह है कि उसने ऐसा नहीं किया है कि खुद पैदा करके और वजूद (अस्तित्व) देके परवरिश (यानी ज़रूरियात उपलब्ध करने का काम) किसी और के सुपुर्द कर दिया हो, बल्कि जिस तरह पैदाइश उसी के पैदा करने से है उसी तरह सबकी परवरिश भी उसी की तरफ़ से हो रही है। और उसकी रूबूबियत और परवरदिगारी (पालन पोषण की क्षमता) का काइनात (सृष्टि) के हर जर्रे (कण) से सीधा सम्बन्ध है। (जारी)

नमाज़ में

अल्लाह के रसूल स० का तरीका

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

तहारत और वज़ू के फ़वायद की तकमील और नमाज़ की तैयारी के लिए अल्लाह के रसूल स० ने मिसवाक को मसनून फ़रमाया, फरमायाः "अगर मुझे उम्मद पर मशक़्क़त का ख़्याल न होता तो लोगों को हर नमाज़ के वक्त मिसवाक का हुक्म देता"।

अल्लाह के रसूल स० जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीर तहरीमा "अल्लाहुअकबर" कहते और इससे पहले कुछ न कहते, और अल्लाहुअकबर कहने के साथ-साथ दोनों हाथ इस तरह कि उनका रुख़ क़िबला की तरफ़ हो और उंगलियाँ कुशादा हों, कानों तक उठाते, फिर दाहिना हाथ बायें हाथ की हथेली की पुश्त पर रखते। फ़र्ज नमाज़ों में यह दुआ पढ़ते :-

तर्जुमा :- "ऐ अल्लाह हम तेरी पाकी और हम्द बयान करते हैं, तेरा नाम मुबारक, और तेरी अज़मत बहुत बलन्द है, और तेरे अलावा कोई माबूद नहीं।"

नवाफ़िल और तहज्जुद में मुख़तलिफ़ दुआयें आई हैं। जैसे :-

तर्जुमा :- "ऐ अल्लाह मुझमें और मेरी ख़ताओं में ऐसी दूरी कर दे जैसी पूरब और पच्छिम में तूने दूरी की है, ऐ अल्लाह मुझे गुनाहों और ख़ताओं से ऐसा साफ़ और पाक कर दे जैसे मैल कुचैल से सफेद कपड़ा साफ किया जाता है।"

इसके बाद आप "अऊज़ बिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ते। फिर सूरः फातेहा पढ़ते आपकी क़िराअत साफ और एक एक लफ़्ज़ अलग करके होती। हर आयत पर ठहरते और आखिरी आयत को खींचकर पढ़ते। जब सूरः फातेहा ख़त्म होती तो "आमीन" कहते। आपके दो सकते होते थे, एक तो तकबीर और सूरः फातेहा के बीच और दूसरा सूरः फातेहा के बाद या रुकूअ़ से पहले, सूरः फातेहा के बाद कोई दूसरी सूरः पढ़ते, कभी तवील सूरः होती और कभी सफर वगैरा की वजह से मुख्तसर सूरः पढ़ते। अक्सर अवक़ात दरमियानी सूरतें पढ़ते जो न बहुत लम्बी होतीं न बहुत छोटी। फज्र की नमाज़ में साठ से लेकर सौ आयतों तक मामूल था। इसमें सूरः हुज्रात से सूरः बुरूज तक की मुख़तलिफ सूरतें तिलावत फरमाते। सफर की हालत में फज्र में सूरः "जिलज़ाल" और "कुल अऊज़ु बिरब्बिन् फलक" और कुल अऊज़ु बिरब्बिल नास" का पढ़ना भी आप से साबित है। जुमा के दिन फज्र में "अलिफ़ लाम मीम अल-सज्दा" और "सूरः दहर" पूरी पढ़ते। और बड़े मजमें में जैसे ईद और जुमा में सूरः "क़ाफ़" और "इक़तरबत्तिसाअतु" और "सब्बेहिस्मरब्बेक" और "हल अताका हदीसुल ग़ाशिया" पढ़ने का मामूल था।

जुहर में कभी-कभी किराअत तवील फ़रमाते। अस्र की नमाज़ की क़िराअत जुहर की नमाज़ की क़िराअत की आधी तवील होती और अगर जुहर मुख्तसर होतीं तो अस्र भी इसी के बराबर होती। मग़रिब की नमाज़ में तवील क़रअत भी फ़रमाइई और मुख्तसर भी। मग़रिब में ज्यादा तर "लमयकुन" से "वन्नास" तक की सूरतों में से क़िराअत फ़रमाते। इशा की नमाज़ में दरमियानी सूरतें पढ़ा करते थे और इसी को पसन्द फ़रमाते थे। हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० ने इशा में जब सूरः बक़रः पढ़ी तो आपने नकीर फ़रमाइ, और फ़रमाया कि "ऐ मआज" क्या तुम लोगों को फ़ितना में मुब्तला करोगे?!

जुमा में "सूरः जुमा" और "सूरः मुनाफ़ेकून" पूरी पढ़ते या "सूरः सब्बेहिस्मरब्बेक" और "सूरः हलअताक" पढ़ते, जुमा व ईदैन के अलावा किसी नमाज़ के लिए आप कोई सूरः मुक़र्रर नहीं फ़रमाते थे कि जिसके अलावा कोई और सूरः न पढ़ें। फ़ज्र की नमाज़ में पहली रकअ़त दूसरी रकअत के मुक़ाबले में तवील फ़रमाते और हर नमाज़ में पहली रकअत कुछ तवील होती। फ़ज्र की नमाज़ में दूसरी तमाम नमाज़ों से ज्यादा तवील आपकी क़िराअत होती, क्योंकि कुरआन शरीफ़ में आता है :-

(सुबह के वक़्त कुरआन का पढ़ना-मोजिबे हुज़ूरे मलायका है)

जब आप रुकूअ़ फ़रमाते तो अपने घुटनों पर हथेलियाँ इस तरह रखते जैसे कि घुटनों को पकड़े हुए हों

और हाथ तान लेते और पहलुओं से अलग रखते। पीठ फैला लेते और बिल्कुल सीधी रखते, और कहते "सुबहान रब्बियल अज़ीम"। आदतन आपकी तसबीहात की तादाद दस होती थी। इसी तरह सज्दा में भी दस बार "सुबहान रब्बियल अअ़ला' कहते। आपका आम मामूल नमाज़ में इतमीनान और तनासुब का ख्याल रखने का था। रुकू से सर उठाते हुए कहते "समिअ़ल्लाहुलिमन हमिदा" रुकू से उठकर क़ौमा में कमर बिल्कुल सीधी कर लेते, ऐसा ही दोनों सज्दों के दरमियान करते। जब क़ौमा में पूरी तरह खड़े हो जाते तो कहते "रब्बना व लकल हम्द" कभी इस पर इज़ाफ़ा भी फ़रमाते। फिर तकबीर अल्लाहुअकबर कहते हुए सज्दा में जाते और हाथों से पहले घुटने रखते और जब उठते तो घुटनों से पहले दोनों हाथ उठाते और सज्दः पेशानी व नाक दोनों पर करते, पेशानी व नाक दोंनों को अच्छी तरह ज़मीन पर रखते और पहलुओं से हाथों को जुदा रखते और उनको इस तरह कुशादा कर लेते कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आती और हाथ कन्धों और कानों के सामने रखते, सज्दा पूरे इतमीनान के साथ करते और पैर की उंगलियों को क़िबला रुख़ रखते और कहते "सुबहान रब्बियल अअ़ला" कभी इस पर इजाफ़ा भी फ़रमाते। और नफ़िल नमाज़ों में सज्दा की हालत में कसरत से दुआ करते, फिर अल्लाहुअकबर कहते हुए सर उठाते और हाथों को अपनी रानों पर रख लेते फिर कहते "अल्लाहुम्मगफिरली, वरहमनी, वज़बुरनी, वहदिनी वरज़ुकनीह" (ऐ अल्लाही मेरी मग़फिरत फ़रमा, मुझ पर रहम फ़रमा, मेरी दिलबस्तगी फ़रमा, मुझे हिदायत नसीब फ़रमा और मुझे रिज़्क अता फ़रमा) फिर पैरों के पंजों घुटनों और रानों पर टेक लेते हुए उठ जाते। जब खड़े होते तो बिना ठहरे हुए किराअ़त शुरू फ़रमा देते और पहली रकअत जैसी दूसरी रकअत भी पढ़ते फिर जब तशह्हुद के लिए बैठते तो बायाँ हाथ बायें रान और दाहिना हाथ दायें रान पर रखते और दायें हाथ की शहादत वाली उंगली से इशारा फ़रमाते और बैठने की हालत में तशह्हुद पढ़ते और सहाबाकराम को इसी तरह तशह्हुद पढ़ने की तालीम देते :–

अनुवाद : "अदब व ताज़ीम और इज़हारे नेयाज़ के सारे कल्मे अल्लाह ही के लिए हैं, और तमाम इबादात और तमाम सदक़ात् अल्लाह ही के वास्ते हैं। (और मैं इन सबका नज़राना अल्लाह के हुज़ूर में पेश करता हूँ) तुम पर सलाम हो ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें, सलाम हो हम पर, और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर, मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं, और मैं इसकी भी शहादत देता हूँ कि मोहम्मद स० उसके बन्दे और पैग़म्बर है।"

इस तशह्हुद में तख़फ़ीफ से काम लेते। किसी रवायत में यह नही आया कि आप पहले तशह्हुद में दरूदशरीफ़ पढ़ते हो। या अज़ाबे क़ब्र, अज़ाबे जहन्नम, मौत व हयात के फ़ितना और दज्जाल मसीह के फ़ितना से पनाह की दुआ मांगते हों।

फिर पंजों के बल घुटनों और रानों पर टेक लेते हुए खड़े हो जाते जैसे पहली रकअत के बाद खड़े हुए थे, और बाक़ी रकअतें पहले की तरह पढ़ते, फिर जब आख़िर रकअत होती जिसमें सलाम फेरना है, तो तशह्हुद के लिए बैठते और पहले वही पहले वाला तशह्हुद पढ़ते। तशह्हुद के बाद दरूदशरीफ़ पढ़ते फिर दुआ करते :–

"ऐ अल्लाह मैं अजाबे क़ब्र से आपकी पनाह चाहता हूँ, और दज्जाल के फितना से आपकी पनाह चाहता हूँ, और ज़िंदगी और मौत के फितना से आपकी पनाह चाहता हूँ, और गुनाहों और क़र्ज़ के बोझ से आपकी पनाह चाहता हूँ।"

हज़रत अबू बक्र रज़ी० को आपने यह दुआ भी तालीम फ़रमाई थी:–

"ऐ अल्लाह मैंने अपने नफ़्स पर बहुत जुल्म किया, और गुनाह सिर्फ आप ही माफ करमाने वाले हैं, तो मुझे अपनी ख़ास मग़फरत नसीब फ़रमाइये, और रहम फ़रमाइये, आप बहुत ही मग़फिरत फरमाने वाले, और बड़े मेहरबान है।"

इनके अलावा भी दुआयें साबित हैं। फिर दाहिनी तरफ सलाम फेरते और कहते "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" और इसी तरह बायें तरफ सलाम फेरते। फिर दाहिनी या बायें जानिब रुख़ करके बैठ जाते, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी० से रवायत है, कि मैं अल्लाह के रसूल स० की नमाज़ के खत्म का अल्लाहुअकबर" अल्लाहुअकबर" की आवाज़ से पता चला लेता था। आप सलाम फेरने के बाद तीन बार इस्तेग़फार पढ़ते और कहते :–

"ऐ अल्लाह तू ही सलामती है,

(शेष पृष्ठ १७ पर)

15वीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक

अल्लामा शिबली नोमानी

तालीमाते नबवी का तीसरा बाब

(नबी सल्ल० की शिक्षाओं का तीसरा अध्याय)

अख़लाक़

अक़ाइद व इबादात के बाद तालीमाते नबवी सल्ल० की किताब का तीसरा बाब अख़लाक़ है। अख़लाक़ से मतलब बनदों के आपस के हुक़ूक़ व फ़राइज़ के वह तअल्लुक़ात हैं जिन को अदा करना हर इन्सान के लिये मुनासिब बल्कि ज़रूरी है। इन्सान जब इस दुनिया में आता है तो इस की हर चीज़ से थोड़ा बहुत उसका तअल्लुक पैदा हो जाता है, इसी तअल्लुक़ के फ़र्ज़ को अच्छी तरह अंजाम देना अख़लाक है। उसके अपने माँ–बाप, बाल–बच्चे, नाते–रिश्तेदार, दोस्त व प्रियजन सबसे तअल्लुक़ात हैं बल्कि हर उस इन्सान के साथ इस का तअल्लुक है जिससे वह मुहल्ला, वतन, राष्ट्रीयता, या किसी तरह का सम्बन्ध रखता है बल्कि इससे आगे बढ़कर हैवानात तक से इस के तअल्लुक़ात हैं और इन तअल्लुक़ात के सबब से उस पर कुछ फ़राइज़ आइद हैं।

दुनिया की सारी ख़ुशी, ख़ुशहाली और अमन व ईमान इसी अख़लाक़ की दौलत से है। इसी दौलत की कमी को हुकूमत व जमाअत अपने ताक़त के क़ानून से पूरा करती है। अगर इन्सानी जमाअतें अपने अख़लाक़ी फ़राइज़ को पूरी तरह अपने आप से अंजाम दें तो हुकूमतों के जबरी क़ानून की ज़रूरत ही न हो। इसलिये बेहतरीन मज़हब वह है जिसका अख़लाक़ी दबाव अपने मानने वालों पर इतना हो कि वह उन के क़दम को सीधे रास्ते से भटकने न दे। दुनिया के सारे मज़हबों ने कमोबेश इसकी कोशिश की है और दुनिया के आख़िरी मज़हब "इस्लाम" ने भी किया है। आगे के अध्यायों में इस्लाम की इन्हीं कोशिशों का जाइज़ा लेना है और मुहम्मद सल्ल० ने इस बारे में जो कुछ कहा और किया है उसको तफ़सील से बताना है।

इस्लाम और अख़लाके हस्नः (सद्आचरण)

इस में शक नहीं कि दुनिया के सारे मज़हबों की बुनियाद अख़लाक़ ही पर है अतएव इस धरती पर जितने पैग़म्बर और सुधारक आये सब की यही तालीम रही कि सच बोलना अच्छा और झूठ बोलना बुरा है, इन्साफ़ भलाई और ज़ुल्म बुराई है, ख़ैरात नेकी और चोरी बदी है लेकिन मज़हब के दूसरे विभागों की तरह इस विभाग में भी मुहम्मद सल्ल० का अभ्युदय परिपूर्णता (तकमीली) की हैसियत रखती है। आप ने फ़रमाया "मैं हुस्ने अख़लाक़ की तकमील के लिए भेजा गया हूँ।" यह इमाम मालिक का बयान है मुसनद अहमद, बेहक़ी और इब्न सअद आदि में इस से भी ज़ियादा साफ़ अल्फ़ाज़ हैं, आप ने फ़रमाया, "मैं तो इसीलिये भेजा गया कि अख़लाक़े हसनः की तकमील करूँ।"

अतएव आप ने अपने अभ्युदय के साथ ही इस फ़र्ज को अंजाम देना शुरू कर दिया, अभी मक्का ही में थे कि अबूज़र रज़ि० ने अपने भाई को इस नये पैग़म्बर के हालात और तालीमात की तहक़ीक़ के लिये मक्का भेजा। उन्हों ने वापस आकर उसकी निस्बत अपने भाई को जिन अल्फ़ाज़ में ख़बर दी वह यह थे "मैं ने उन को देखा कि वह लोगों को अख़लाक़े हसनः की तालीम देते हैं।"

हब्शः की हिज्रत के ज़माने में नजाशी ने जब मुसलमानों को बुलवा कर इस्लाम की निस्बत तहक़ीक़ात की उस वक़्त हज़रत जाफ़र तैयार ने जो तक़रीर की उसके कुछ वाक्य यह हैं:–

"ऐ बादशाह ! हम लोग एक जाहिल क़ौम थे, बुतों को पूजते थे, मुर्दार खाते थे, बदकारियाँ करते थे, हमसायों को सताते थे, भाई–भाई पर ज़ुल्म करता था, ज़बरदस्त कमज़ोरों को खा जाते थे। इस बीच एक व्यक्ति हम में पैदा हुआ। उसने हम को सिखाया कि हम पत्थरों को पूजना छोड़ दें, सच बोलें, ख़ूनरेज़ी से बाज़ आयें, यतीमों का माल न खायें, हमसायों को आराम दें, पारसः औरतों पर बदनामी का दाग़ न लगायें।"

इसी तरह रोम के बादशाह के दरबार में अबुसुफ़ियान ने जो अभी

तक काफ़िर थे आप सल्ल० की इस्लाही (सुधारात्मक) दावत का जो संक्षिप्त ख़ाका खींचा उस में यह तस्लीम किया कि वह ख़ुदा की तौहीद और इबादत के साथ लोगों को यह सिखाते हैं कि वह पाकदामनी अपनायें, सच बोलें और क़राबत (निकट सम्बन्धी) का हक़ अदा करें। कुर्आन ने जगह–जगह आप सल्ल० की तारीफ़ में कहा है :–

"यह पैग़म्बर इन अनपढ़ जाहिलों को पाक व साफ़ करता और इनको किताब व हिकमत की बातें सिखाता है।" (सूरः जुमा–२)

इस आयत में दो लफ़्ज़ फ़ैसला के क़ाबिल हैं, एक पाक व साफ़ करना जिसको कुर्आन ने तज़कियः कहा है और दूसरा हिकमत। १. तज़कियः का शाब्दिक अर्थ है पाक व साफ करना, निखारना, मैल कुचैल दूर करना। कुर्आन ने इस शब्द को इस अर्थ में प्रयोग किया है कि नफ़्से इन्सानी को हर क़िस्म की नजासतों और मैल कुचैल से निखार कर साफ़ सुथरा किया जाये। सूरः शम्स (७–६) में है :–

तर्जुमः– क़सम है नफ़्स की और जैसा उस को ठीक किया फिर उस में उसकी बदी और नेकी डाल दी। बेशुबह जिसने इस नफ़्स को साफ़ सुथरा बनाया वह कामयाब हुआ और जिसने इसको मिट्टी में मिला दिया वह नाकाम रहा।

दूसरी जगह :–

तर्जुमः– बेशुबह वह जीता जिसने अपने को पाक व साफ़ किया और अपने रब का नाम लिया और नमाज़ पढ़ी। (सूरः अअ्ला १४–१५)

एक जगह इस्लाम की दावत के नतीजा को तज़कियः के लफ़्ज़ से अदा किया हैः–

तर्जुमः– पैग़म्बर ने त्योरी चढ़ाई और मुंह मोड़ा कि उस के पास वह अन्धा आया और तुझे क्या ख़बर है शायद कि वह संवर जाता या वह सोचता तो तेरा समझाना उस के काम आता। (सूरः अबस १–४)

इन आयतों से अन्दाज़ा होगा कि कुर्आन पाक में इस "तज़कियः" का मतलब क्या है जिसको उस ने पैग़म्बर सल्ल० की विशेषता बताई है। इस से यह भी मालूम होगा कि मुहम्मद सल्ल० की नबूवत व रिसालत का सबसे बड़ा फ़र्ज़ यह था कि वह इन्सान के जी जान को चमका दें। उन को बुराइयों से पाक करें और उन के अख़लाक़ व आमाल को दुरुस्त और साफ़ सुथरा बनायें। अतएव जो बातें ऊपर बयान की गयीं उन से साबित होता है कि दोस्त और दुश्मन दोनों आप की इस विशेषता के क़ायल थे।

२. हिकमत– इस के बाद दूसरा लफ़्ज़ हिकमत का है, यद्यपि इस शब्द की पूरी व्याख्या इस से पहले चौथे भाग में की जा चुकी है, मगर इस मौक़ा के लेहाज़ से यह कहना है कि हिकमत का शब्द कुर्आन पाक में जहाँ उस इल्म व इरफ़ान के अर्थ में है जो नूरे इलाही की सूरत में नबी के सीने में डाल दिया जाता है और जिसके आसार व मज़ाहिर रसूल की ज़बान से कभी मुसालेह व इसरार और कभी सुनन व अहकाम की सूरत में ज़ाहिर होते हैं वहीं इसका दूसरा इतलाक़ इस इल्म व इरफ़ान के उन अमली आसार व नताइज पर भी होता है जिनमें बड़ा हिस्सा अख़लाक़ी तालीमात का है। कुर्आन में दो मौक़ों पर यह बताया गया है कि इस दूसरे अर्थ की हिकमत में कौन–कौन बातें दाख़िल हैं। सूरः बनी इस्राईल में तौहीद, माँ–बाप की इताअत व तआज़ीम, क़राबतदारों और मुहताजों की इमदाद की नसीहत और फ़िज़ूल ख़र्ची, कंजूसी, औलाद कुशी, बदकारी, किसी बेगुनाह की जान लेने और यतीमों के सताने की मनाही के बाद, वअ़दा वफ़ा करने, ठीक नापने तौलने और ज़मीन पर अकड़ कर न चलने की ताकीद की गयी हैं। इसके बाद इरशाद है :–

तर्जुमः– यह हिकमत की उन बातों में है जिनको तेरे रब ने तुझ पर 'वही' किया। (कुर्आन)

सूरः लुक़मान में है कि :–

तर्जुमः और हमने लुक़मान को हिकमत की बातें सिखाईं कि ख़ुदा का शुक्र अदा कर।

इसके बाद हिकमत की और व्याख्या की गई है कि "किसी को ख़ुदा का शरीक न बना, माँ–बाप के साथ मेहरबानी से पेश आ, नमाज़ पढ़ाकर, लोगों को भली बात करने को कह, और बुरी बात से बाज़ रख। मुसीबतों में मज़बूती दिखा, मग़रूर न बन, ज़मीन पर अकड़कर न चल, नीची आवाज़ में बातें कर।" इन आयतों से मालूम हुआ कि क़ुर्आन की इस्तलाह (शब्दावली) में इन ख़ैर की स्वाभाविक बातों को भी जिनका ख़ैर होना स्वाभाविक रूप से तमाम क़ौमों और मज़हबों में मान्य हैं और जिनको दूसरे अर्थ में *अख़लाक़* कह सकते हैं "हिकमत" कहा गया है।

इस तफ़सील से मालूम होगा कि मुहम्मद सल्ल० की शरीअत में अख़लाक़ का मर्तबः और पायः यह है कि इनको "हिकमत" के शब्द से व्यक्त

(शेष पृष्ठ १४ पर)

अख़्लाक़ी इमारत की अव्वलीन बुन्यादें

(नैतिक सिद्धान्त)

मौलाना सय्यद मु० राबे हसनी

तअ्लीम व तर्बियत का इन्तिज़ाम इन्सान की शख़्सीयत (व्यक्तित्व) को बासलाहियत (योग्य) बनाने, इन्सानी आवश्यकताओं को समझने और उनको अच्छे तरीक़े से पूरा करने के लिये ज़रूरी जानकारी और काम को अंजाम देने की सलाहियत (योग्यता) पैदा करने के लिये किया जाता है। कहने को तो तअ्लीम व तर्बियत दो लफ़्ज़ हैं लेकिन दोनों का मक़सद (उद्देश्य) एक ही है। इस सिल्सिले में इस बात का पहले से समझना और तै करना ज़रूरी होता है कि इन्सान को कैसा इन्सान बनाना है? क्या ऐसा इन्सान जो शक्ल व सूरत में तो इन्सान हो लेकिन तजरिबाकारों ने और ख़ुदा की तरफ़ से दी हुई ख़ुसूसी समझ रखने वालों जैसा इन्सान बनाना तजवीज़ किया हो उस पर वह खरा न उतर रहा हो, या फिर ऐसा इन्सान जो अपने इर्द गिर्द की मख़लूक़ात (सृष्टि) को देखकर उन्ही की तरह आज़ादाना और ख़ुद ग़रज़ाना ज़िन्दगी गुज़ारना सीखे। यह बात कि इन्सान अपने इर्द गिर्द की मख़्लूक़ात (प्राणियों) के तौर तरीक़े को समझकर तर्बियत ले सकता है कही तो जा सकती है लेकिन जिसने इन्सानों को दुन्या में पैदा किया, तर्बियत का बेहतर तरीक़ा वही तजवीज़ कर सकता है और पैदा करने वाले ने जिस मक़सद से पैदा किया है उस मक़सद को जानकर उसके मुताबिक़ तर्बियत का तरीक़ा तय करना ही सहीह तरीक़ा कहा जाएगा।

तअ्लीम व तर्बियत का निज़ाम, तर्बियत से शुरूअ होता है। दर्मियान में तअ्लीम का वह तरीक़ा जो राइज (प्रचलित) है, इख़्तियार किया जाता है और उसके बअ्द तर्बियत का सिलसिला क़ाइम रहता है। इब्तिदाई उम्र (आरम्भिक आयु) में तर्बियत की ज़िम्मेदारी माँ बाप पर होती है और उसके अ़मल का तरीक़ा ख़ुद का बनाया हुआ होता है। माँ बाप को अपने तौर तरीक़े में और बच्चे की देखभाल में इस बात का ख़्याल रखना होता है कि बच्चे के सामने अच्छी और मुनासिब (उचित) बातें आएं माँ बाप का अपनी ज़िन्दगी में तौर तरीक़ा ऐसा हो जो बच्चे के ज़िहन में अच्छा ख़याल डाल सके क्योंकि बच्चा माँ बाप को जैसा करता देखता और सुनता है वह उसके दिल व दिमाग पर जम जाता है, चाहे वह माँ बाप की बात हो या घर में रहने वाले दूसरे लोगों की बातें हों। ऐसे माहौल (वातावरण) में बच्चे की इब्तिदाई उम्र के कई साल गुज़रते हैं और यह उसकी शख़्सीयत की अख़लाक़ी इमारत की बुन्यादी ईंट होती है यह ईंट अगर टेढ़ी हो तो पूरी इमारत टेढ़ी हो जाएगी यह ईंट कमज़ोर हो तो पूरी इमारत कमज़ोर हो जाएगी। इस मर्हले के बअ्द फिर तअ्लीम का मरहला आता है। इस इब्तिदाई मर्हले में बच्चे को मुनज़्ज़म तौर पर वह मअ्लूमात दी जाती हैं जो उसकी सलाहीयतों के बढ़ाने में मुआविन (सहायक) हों। इन दो इब्दिाई मर्हलों में बच्चा दूसरों की फ़िक्र व तवज्जुह का मुहताज होता है। इन मर्हलों के बअ्द इन्सान को ख़ुद अपना भला बुरा देखना होता है और अपने लिये नुक्सान देह और फाइदेमन्द के बीच फ़र्क़ को समझना होता है, वह अगर शुरूअ से अच्छाई को अच्दाई और बुराई को बुराई समझने की सलाहीयत हासिल कर चुका होता है तो अपना रास्ता बहुत दुरुस्त और कामयाब बना लेता है वरना वह उन सलाहीयतों से महरूम हो जाता है जो एक इन्सान को दूसरी मख़्लूक़ात से बुलन्द करती है।

इस वक़्त मग़रिबी निज़ामे तअ्लीम व तर्बियत ने जो राह दिखाई है उसने इन्सान के बुलन्द, अख़्लाक़ी मकाम (उच्च नैतिक पद) के लिये बड़े खतरात पैदा कर दिये हैं, माँ बाप का तरीक़ा अपनी औलाद के सिलसिले में इस बात से बेनियाज़ हो गया है कि उनके बच्चे इन्सानियत के भले और बुरे मुआमले में क्या सीखते और समझते हैं और उनकी ज़िन्दगी की अख़्लाकी इमारत की यह बुन्यादी ईंट कैसी रखी जा रही है, क्या बुरा है क्या अच्छा है, क्या फाइदेमन्द है, क्या नुक्सान वाला है इसकी तरफ एक आज़ादाना और और दिल पसन्द रवैया इख़्तियार किया जा रहा है। चुनांचि इस इब्तिदाई मरहले के बाद तअ्लीम गाहों में जो बच्चे आ रहे हैं वह जो खुसीसीयात और अच्छी बुरी पसन्द का जो सांचा लेकर आ रहे हैं वह मुस्तक्बिल (भविष्य) के लिये फ़िक्र (चिन्ता) पैदा कर रहा है। उसके बाद का तअ्लीमी मर्हला भी पुराने

तअ़लीम निज़ाम से बदल दिया गया है। इस मर्हले में ज़िन्दगी का मकसद (उद्देश्य) सिर्फ़ अपनी जिस्मानी और माद्दी पसन्द को बना लिया गया है कि यह कम उम्र इन्सान अपनी तअ़लीमगाह से सिर्फ़ वह बातें सीखे जो उसकी दुन्यावी ज़िनदगी में काम आएं यअ़नी वह अच्छा कमाने वाला, दूसरों से अपनी इज़्ज़त करवाने वाला इन्सान बन जाए, रही यह बात कि उसके अख़लाक़ कैसे हों? इन्सानीयत का दर्द उनमें कैसा हो? खैर ख्वाही का ज़ज़्बा उनमें कितना हो? उसको उसके रब ने जिस मकसद के लिये दुन्या में पैदा किया उस मकसद के मुताबिक़ वह क्या कर सकता है और उसे क्या करना चाहिये यह सब बातें मग़्रिब से आए हुए निज़ामे तअ़लीम में बिल्कुल नाक़ाबिले तवुज्जुह बना दी गई हैं उसको बिल्कुल ऐसा इन्सान बनाया जा रहा है जिसमें दूसरी मख़्लूक़ात के मुक़ाबले में सिर्फ इल्म व अक़्ल के लिहाज से इम्तियाज़ (श्रेष्ठता) रहे लेकिन अख़्लाक के लिहाज़ से वह इम्तियाज़ी ख़ुसूसीयत के लाइक नहीं। हमारे मुस्लिम दानिशवर और तअ़लीम के माहिरीन जिन्होंने मग़्रिबी तअ़लीम की राह से अपनी इल्मी व ज़िहनी सलाहीयत (योग्यता) बनाई है उनमें अल्हम्दु लिल्लाह कुछ लोग ऐसे हैं जो इस ख़तरे को महसूस कर रहे हैं और कोशिश कर रहे हैं कि मग़्रिब की इन ख़राबियों से बचा जा सके, उनकी कोशिश काबिल क़द्र है, लेकिन उनकी तअ़दाद (संख्या) कम है, और आ़म निज़ाम इन्सानियत की भलाई की कोशिशों से खाली है।

हमारे दीनी मदारिस इन्ही मज़कूर–ए–बाला (उपरोक्त) खराबियों के तदारुक (निवारण) और तअ़लीम व तर्बियत के रुख़ को सहीह रुख़ देने के लिये काइम किये जाते हैं, वह इस सिलसिले में अल्लाह की दी हुई हिदायात के मुताबिक रहनुमाई देते हैं। जिस्मानी और मआ़शी बातों का लिहाज़ किसी भी तअ़लीमी व तर्बियाती निज़ाम में नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता वह दीनी मदारिस में भी नज़र अन्दाज़ नहीं किया जाता लेकिन अस्ल ज़रूरत इस बात की है कि इन्सान में इन्सानी अक़्दार और अअ़ला अख़्लाक़ भी पैदा हों। दोनों पहलुओं को जमा करने की ज़रूरत है और इसकी फ़िक्र उन सभी लोगों पर वाजिब (अनिवार्य) है जो तर्बियत व तअ़लीम के निज़ाम पर असर अन्दाज़ हो सकते हैं। अफ़सोस की बात है कि यह दोनों पहलू जो मिलकर एक वहदत (एकाई) बन सकते हैं और बनने चाहिये वह दोनों अलग–अलग कर दिये गये हैं, और एक दूसरे को गैर ज़रूरी समझते हैं जहाँ तक मुस्लिम सूसाईटियों का तअ़ल्लुक है वह दो तरह का बन गया है। एक को दीनी कहा जाता है और दूसरे को बेदेनी के दायरे में महदूद (सीमित) रखा जाता है यह सूरते हाल (स्थिति) किसी क़ौम के लिये मुनासिब हो न हो मुसलमानों के लिये नामुनासिब (अनुचित) है कि इस कौम की नस्लें परवान चढ़कर दो शाख़ा हो जाएं और एक शाख़ का तअ़ल्लुक दूसरी शाख़ से कुछ न रहे। हमारे नदवतुल उलमा ने इसी खराबी को समझाने और इसके इलाज की फ़िक्र करने की शुरूअ़ से दअ़वत दी और इसको अपने वसाइल (साधन) और इम्कानात के मुताबिक अमल में लाने की कोशिश की और अल्हम्दुलिल्लाह इस बात को समझने वालों में इज़ाफ़ा हो रहा है खुदा को आस्मानी हिदायत की ज़रूरत व अहमीयत और मग़रिब के इख़्तियार किये हुए खालिस माद्दी निज़ाम की खराबियों को समझने और भले तथा बुरे में फ़र्क़ (अंतर) करेन का सिलसिला बढ़े और अख़्लाक़ व किरदार और अअ़ला इन्सानी मतमहे नज़र (दृष्टि) को जो खतरात पेश आ रहे हैं उनको थामा जा सके।

अगर आप को ''सच्चा राही'' अच्छा लगा तो आप इसे दूसरों को भी पढ़ाइये।

(पृष्ठ १२ का शेष)

किया गया है और क़ुर्आन पाक की यथार्थ की अभिव्यक्ति (इज़हारे हक़ीक़त) से कि ''वही–ए–मुहम्मदी' किताब और हिकमत दोनों पर बराबर शामिल होने वाली है। यह राज़ (भेद) ज़ाहिर होता है कि इस्लाम में इबादात और दूसरे अहकाम को जो अहमियत हासिल है उससे कम अख़लाक़ की अहमियत उसकी निगाह में नहीं। ख़ुद क़ुर्आन पाक ने इसे साफ़ बयान किया है :–

तर्जुमः ऐ ईमान वालो! रुकूअ़ करो, सज्दः करो, अपने रब को पूजो, और नेकी करो ताकि तुम फ़लाह (भालाई) पाओ। (सूरः हज्ज–१)

गोया ईमान की रूह (आत्मा) के बाद दावते मुहम्मदी सल्ल० के जिस्म के दो बाजू हैं एक इबादत और दूसरा अख़लाक, एक ख़ालिक का हक़ और दूसरा मख़लूक का और इन्हीं के योग का नाम ''इस्लाम'' है। (जारी)

वासिक

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

मुअ़तसिम के बाद उसका बेटा वासिक तख़्त पर बैठा और छः वर्ष तक हुकूमत करने के बाद सन् २३२ हि० में उसकी मृत्यु हो गई। पहले बताया जा चुका है कि अरब क़रीब–क़रीब हुकूमत से बेदखल हो चुके थे। उस का उन्हें बहुत दुख था। इस क्रोध में अरबों ने बग़ावत की लेकिन मुअ़तसिम ने ख़त्म कर दिया था। उसके ही ज़माने में तुर्कों का असर पहले से अधिक हो गया।

मुतवक्किल २३२–२४७ हि०

वासिक के बाद अमीरों और सरदारों ने मिलकर मुतवक्किल को बादशाह बनाया। यह वैसे तो पुरानी चाल का आदमी था और इधर उधर की बेकार बातों को नापसन्द करता था लेकिन अलवियों (हज़रत अली रज़ि० की औलाद) से सख़्त दुशमनी थी। इस मामले में उसकी दुशमनी इस क़द्र बढ़ी हुई थी कि अलवियों पर दोस्ती रखने पर भी सज़ा देता था और केवल अपने ज़माने के लोगों के साथ नहीं बल्कि सैकड़ों वर्ष पहले के बुज़ुर्गों के साथ भी उसका यही व्यवहार था। इंतिहा यह है कि एक बार हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की क़ब्र को भी खोदने का आदेश दे दिया। उस को यहूदियों और इसाइयों से भी बहुत नफरत थी। उनको विशेष प्रकार के कपड़े पहनने का हुक्म दिया और मुसलमानों से बिल्कुल अलग कर दिया।

उस के ज़माने में भी रूमियों से लड़ाइयाँ हुईं लेकिन दोनों का पल्ला बराबर ही रहा। तुर्कों का प्रभाव उस के जमाने में बहुत बढ़ गया और वह एसे छा गए कि खुद ख़लीफ़ा तक की जान अज़ाब में आ गई। मुतवक्किल ने बहुत ही कोशिश की कि इस मुसीबत से छुटकारा हो। एक आध तुर्क सरदार को क़त्ल भी करवाया लेकिन उन का कुछ न हो सका और उलटे खुद ही मारा गया। अजीब बात यह कि खुद उस का बेटा मुनतसिर उसमें शरीक था।

मामून के जमाने से मुसलमान फलसफी (दार्शनिक) हो गए थे। मुतवक्किल बड़ा पक्का मुसलमान था। उस ने फिर मुसलमानों को क़ुर्आन व हदीस की तरफ लगाया लेकिन स्वभाव में कठोरता थी।

मुनतसिर– २४७–२४८ हि०

मुतवक्किल को क़त्ल करने के बाद तुर्कों ने मुनतसिर को तख़्त पर बैठाया लेकिन एक दिन भी चैन नसीब न हुआ। बाप के क़त्ल की कुढ़न, तुर्कों का धड़का हर समय जान घुलाए डालता था। आख़िर छः महीने में घुट–घुट कर मर गया।

मुसतईन स० २४८–२५२ हि०
मुअ़तिज़ स० २५२–२५५ हि०
मुहतदी स० २५५–२५६ हि०

मुतवक्किल के क़त्ल के बाद गोया तुर्क ही बादशाह हो गए थे। और खलीफा उन के हाथ में कठपुतली होकर रह गए थे। जिस से प्रसन्न होते तख़्त पर बैठाते। जब नाराज़ होते क़त्ल कर डालते और किसी दूसरे को बादशाह बना देते। आठ वर्ष में मुसतईन, मुअ़तिज़, महतदी तीन खलीफ़ा हुए और मारे गए। इस अफरातफ़री (अव्यवस्थता) में देश की दुर्दशा हो गई। सरहद पर रूमियों का अत्यसाचार बढ़ गया और जिसका जहाँ जोर चला मुल्क दबा बैठा। मुसईन के जमाने (स० २५० हि०) में तबरिस्तान व वेलम हुकूमते ज़ियादिया क़ायम हुई। मुअ़तिज़ के ज़माने में सजिस्तान में हुकूमत सफ़ारिया (२५२ हि०) और मिस्र में हुकूततूलूनिया अहमद बिन तूलून के हाथों शुरू हुई। यह हुकूमतें पूरी तरह आज़ाद थीं केवल नाम मात्र खलीफा का असर था।

मुअ़तमिद स० २५६–२७६ हि०

स० २५६ हि० में मुअ़तमिद तख़्त पर बैठा। पिछले दस वर्ष में अब्बासियों की कमज़ोरी से सलतनत पूरी तरह से तुर्कों के हाथ में आ गई थी। हुकूमत का आना था कि खुद उन लोगों में झगड़े शुरू हो गए जिनसे विवश होकर उन्हों ने मुअ़तमद से प्रार्थना की कि अपने भाई को सरदार बना दे। उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई और मूफ़क़ सेनापति नियुक्त हो गया।

अब तर्कों का जोर टूट गया लेकिन खुदमूफ़क सलतनत पर छा गया और मुअ़तमिद का केवल नाम बाकी

रह गया। सलतनत की इस गड़बड़ को देखकर मावरा उन्नहर के गवर्नर नस्र बिन अहमद ने स० २६१ हि० में मवरा अन्नहर में सामानी सलतनत कायम कर दी जो स० २८६ तक बाकी रही। जो मुल्क बचा हुआ था उस में तरह तरह की आफतें मची हुई थीं। कुछ दिनों हब्शियों ने बड़ी ऊधम मचाई। लगभग पूरे इराक़ पर कब्ज़ा कर लिया और लोगों पर वह अत्याचार किये कि तौबा भली। ऐसा मालूम होता था कि अब्बासी शासन समाप्त कर देंगे। मुअ़तमिद ने कई फौजें उनके मुकाबले में भेजीं मगर हब्शियों ने सबको प्रास्त कर दिया। मूफ़िक ने अब देखा कि यह हब्शी (जंगली) सारा मुल्क उजाड़ देंगे तो खुद उनके मुकाबले के लिए निकला और कई वर्षों की लड़ाई के बाद जालिमों का खातमा किया।

हब्शियों के अतिरिक्त इसमाईली, बातिनी और क़रमुती कई और फ़िरके (सम्प्रदाय) पैदा हुए जो आगे चलकर मुसलमानों के लिए बड़ी मुसीबत बन गए। इस दुर्दशा की वजह से रूमियों को मौका मिल गया और मुसलमान उन के हाथों बहुत तेंग हुए। अब ख़िलाफत की यह दशा हो गई थी कि नाच, गाना, शराब, कबाब तमाम बुरी चीज़ों का रिवाज हो गया। एक दिन मुअ़तमिद ने शराब अधिक पी ली फिर उस पर खाना खाया इस से हैजा हो गया और मर गया।

मुअ़तज़िद– स० २७६–२८६

मुअ़तमिद के बाद उसका भतीजा मुअ़तज़िद तख़्त पर बैठा। यह बाड़ा रोबदाब का बादशाह था। उस ने सलतनत की दशा बहुत कुछ सुधार दी जिससे फिर मुल्क में रौनक आ गई लेकिन करामतः की मुसीबत ऐसी सख़्त थी कि सारी मेहनत पर पानी फिर जाना था। अभी यह झगड़ा ख़त्म होने वाला न था कि फ़ातमीयों का क़िस्सा उठ खड़ा हो गया। मिस्र की राजधानी क़ाहिरा उन्हीं की आबाद की हुई थी। मिस्र की तूलूनी हुकूमत से अलबत्ता संबन्ध अच्छे थे। उन दिनों ख़ुमारिया वहाँ का बादशाह था। उस से मुअ़तज़िद से इतने अच्छे संबन्ध थे कि उस ने अपनी बेटी क़तरुन्निदा को खलीफा के निकाह में दे दी।

उस ज़माने में एक और खास बात हुई। याद होगा कि मुअ़तसिम ने तुर्कों के प्रभाव के कारण सामारा को राज्य की राजधानी बनाया था लेकिन अब तुर्क खत्म हो चुके थे। इसलिए मुअ़तज़िद ने फिर बग़दाद में रहना शुरू किया। २२ रबीउस्सानी स० २८६ हि० को मुअतज़िद की मृत्यु हुई। उस ने देश में प्रथिष्ठा (वक़ार) क़ाइम करने के अतिरिक्त बहुत से सुधार किये।

मुकतफ़ी स० २८६–२९५

मुअ़तज़िद के बाद उस का बेटा मुकतफ़ी तख़्त पर बैठा उस के ज़माने में अधिकारियों की खुद ग़र्ज़ी की वजह से फिर अब्बासी हुकूमत कमजोर हो गई और करामतः का जोर इतना बढ़ गकया कि लोगों का निकलना बैठना कठिन हो गया। दिन धाड़े डाके पड़ने लगे। क़ाफ़िलें के क़ाफिले लुट जाते। जानों की तो कोई गिनती न थी। मुक़तफ़ी ने बड़ी तत्परता से उन का मुकाबला किया। आखिरी मुद्दत की दोड़ धूप के बाद बड़े–बड़े क़रमती सरदार मारे गए जिस से उन का ज़ोर कम हो गया लेकिन थोड़ी जान फिर भी बाकी रही जिस ने आगे चलकर बड़ा ज़ोर बान्धा।

मिस्र की तूलूनी हुकूमत का हाल पहले दिया जा चुका है। मुकतफी के ज़मानो में वह दशा बिल्कुल ख़त्म हो गई और सारा मिस्र फिर अब्बासियों के कब्ज़े में आ गया। उसी ज़माने में अफरीका के अग़लबी सलतनत भी खत्म हो गई और उस पर फातमीयों का कब्जा हो गया। स० २९५ हि० में मुकतफ़ी का देहान्त हो गया।

मुक़तदिर स० २९५–३२०

मुकतफ़ी के बाद उस का भाई मुक़तदिर बादशाह हुआ और कोई २५ वर्ष हुकूमत की। उस में खुद कोई योग्यता न थी। इंतिजाम में औरतों का बड़ा दखल था इस कारण बड़ी गड़बड़ी पैदा हो गई। देश की सारी आमदनी पर मंत्रियों, बड़े अधिकारियों ने कब्जा कर लिया। यह अरब प्रजा का ख़ून चूसकर अपना घर भरते थे और जो लोग अपना सर कटाते थे, उनको कुछ न मिलता था। इसलिए सबने मिलकर मुक़तदिर से होमरूल मांगा जैसे आज से पहलें हम लोग अंग्रेज़ों से होमरूल मांगते थे लेकिन वह औरतों के हाथों में ऐसा फंसा था कि सुना ही नहीं। इसका नतीजा यह हुआ कि फौजों ने बगावत करके उसको माजूल कर दिया। और क़ाहिर को खलीफ़ा बनाया लेकिन अभी थोड़े दिनों मुक्तदिर के भाग्य में शासन करना लिखा था। इसलिए फिर उस को बादशाह बनाया लेकिन वह ज़ियादा दिनों तक बादशाह न रह सका और एक बड़े विरोधी अमीर यूनुस ने स० ३२० हिजरी में उसे क़त्ल कर डाला।

उसके ज़माने में करामतः की शक्ति इतनी बढ़ गई कि मक्का तक

को न छोड़ा। हज के ज़माने में मक्का पहुंच गये और उसको खूब लूटा। हाजियों को मार–मार कर उनकी लाशें ज़मज़म में डाल दीं, गिलाफ़े काबा फाड़ डाला, हज्र अस्वद उठाकर ले गए ग़रज़ कि कोई ज़ुल्म ऐसा न था जो उन्हों ने मक्का वालों पर न ढाया हो। रूमियों ने भी बड़े हाथ पैर निकाले लेकिन जयूं–त्यूं किसी तरह उन्हें रोका गया।

क़ाहिर स० ३२०–३२२ हि०
राज़ी स० ३२२–३२६ हि०

मुक़तदिर के क़त्ल के बाद क़ाहिर तख्त पर बैठाया गया लेकिन थोड़े ही दिनों में उतार कर आंखों में नील की सलाई फेर दी गई। और उस की जगह राज़ी बादशाह बनाया गया। उस ने कोई दस वर्ष हुकूमत की। यह योग्य और समझदार था लेकिन राज्य इतना कमजोर हो चुका था कि किसी तरह दशा ठीक न हो सकी। उस ने अमीरुल अमराई का एक नया पद कायम किया जिस से आगे चलकर रही सही शान और भी जाती रही।

करामतः की मुसीबत ऐसी सख़्त थी कि कि लोग हज के लिए भी नहीं निकल सकते थे। यह तो सब था ही खास शहर बग़दाद में झगड़े शुरू हो गए। उस की वजह यह हुई कि उस ज़माने में लखनऊ की तरह वाजिद अली शाही सारें बगदाद में फैल गई। बग़दाद वाले रंगरलियों में लग गए थे। नाच गाना शराब कबाब में मस्त रहते थे। यह दशा देखकर हंबली (इमाम अहमद बिन हंबल के मानने वाले) उठे और इन बातों को मिटाना शुरू कर दिया जहाँ गाने वाले नजर आते उनको पीटते, शराबी दिखाई देता उसे मारते। शराब की दुकानों में घुसकर शराब के बरतन तोड़ डालते। इन बातों से बग़दाद वाले तंग आ गए। राजी ने बड़ी मुश्किलों से इसे रोका। मिस्र जो मुकतफ़ी के ज़माने में कब्ज़े में आया था, फिर हाथ से निकल गया और उस पर तूलूनिया के गुलाम अख़शीदी खान्दान का क़ब्जा हो गया। इसके अतिरिक्त बनी बूयः की एक नयी हुकूम शुरू हुई जो बढ़ते बढ़ते बगदाद तक पहुंच गई। आगे चलकर खलीफ़ा पर छा गई स० ३२६ हि० में राजी का देहान्त हो गया।

राज़ी बड़ा नेक और आलिम दोस्त खलीफा था। कविता बहुत अच्छी कहता था। खलीफा के अधिकार यद्यपि इस से पहले समाप्त हो चुके थे लेकिन राज़ी के ज़माने तक जाहिरी ठाठ बाठ कायम था और दरबार में बादशाही की शान नजर आती थी लेकिन राज़ी के मरते ही यह भी खत्म हो गया। सारी शानो शौकत अमीरुल उमरा (सरदारों) ने छीन ली और खलीफ़ा को केवल वज़ीफ़ा मिलता था। (जारी)

अनुवाद– हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ १० का शेष)

और तुझ ही से सलामती है, तू बाबरकत है, ऐ इज्ज़त और बुज़ुर्गी वाले।"

और उतनी ही देर क़िबला रुख़ रहते जितनी देर यह कहलें, फिर तेजी से मुक्तदियों की तरफ़ रुख़ फ़रमा लेते, कभी दायें जानिब कभी बायें, और हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह कल्मात पढ़ते :–

अनुवाद : "अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, वह वाहिद है, उस का कोई साझी नहीं, सब कुछ उसी का, सारी तारीफ़ें उसी की, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, ऐ अल्लाह जो आप दें उसकी कोई रोकने वाली नहीं, और जिसको रोक दें उस को कोई देने वाला नहीं, और आप के मुकाबले में किसी माल वाले को उसकी मालदारी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती।"

और कहते :–

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह तनहा है उसका कोई शरीक नहीं, उसी की हुकूमत है, और उसी की सब तारीफ़ें, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, खुदा के अलावा (किसी के पास) कूवत है, न ताकत"

और यह भी कहते :–

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, सिर्फ उसी की इबादत करते हैं, उसी का इनाम व एहसान है, और उसी की अच्छी तारीफ़ें, और खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, हम सिर्फ उसी की इबादत करते हैं, दीन को उसके लिए खालिस करके, चाहे काफ़िरों को कैसा ही बुरा लगे।"

आपने उम्मत के लिए यह मुस्तहब क़रार दिया है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद "सुबहान अल्लाह" तैंतीस बार, 'अल्हम्दुलिल्लाह' तैंतीस बार और "अल्लाहुअकबर" तैंतीस बार कहें और सौ का अदद "लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीकलहु लहुल मुल्कु वलहुलहमदु वहुव अला कुल्लि शैइन क़दीर" कह कर पूरा करें और एक दूसरी रवायत में "अल्लाहुअकबर" का चौंतीस बार कहना भी आया है।

नये लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखे, एक लाइन छोड़ कर लिखें। आलिम न हों तो कुर्आन हदीस के अनुवाद में किसी मान्यता प्राप्त आलिम का अनुवाद लें स्वयं अनुवाद न करें।

ज़िन्दगी की अस्ल पूँजी

दूसरी किस्त

ख़ुदा और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मह़ब्बत है

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने किसी की कोई हैसियत नहीं। इसी सिल्सिले में हज़रत आइशा (रज़ि०) के कुछ शिअ़र भी नक़्ल किये जाते हैं जिनका अर्थ यूँ है : यूसुफ़ (अ०) को देखकर मिस्र की औरतों ने अपनी उंगलियाँ काट ली थीं अगर वह मेरे हज़रत को देखतीं तो दिल के टुकड़े कर डालतीं।" तो रसूले पाक अ़लैहिस्सलात वस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने ऐसा हसीन बनाया था कि दिल बेसाख़्ता खिंचते थे।

दिल खिंचे बेसाख़्ता वह कशिश हासिल तुझे।

तो मअ़लूम हुआ कि यह तीनों चीज़ें हमारे इख़्तियार में है और जब इख़्तियार में है तो फिर मुतालबा सहीह होगा कि अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत करो। ग़ौर करो क्या आप (स०) से ज़ियादा कोई साहिबे कमाल है या आपसे ज़ियादा कोई साहिबे हुस्न व जमाल है या आपसे ज़ियादा कोई इहसान करने वाला है (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अगर ग़ौर करे आदमी कि आप (स०) कितने बड़े इहसान करने वाले हैं तो वहीं आप (स०) की महब्बत में डूब जाए मगर करे तो ग़ौर। इसीलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मुझे अपने वालिद से अपनी औलाद से, अपने घर वालों से और तमाम लोगों से मुझे ज़ियादा न चाहे। तो अब आदमी अगर अल्लाह और उसके रसूल (स०) से महब्बत करने लगे तो ज़ाहिर है कि उसका नतीजा क्या होगा? आप (स०) की हर अदा इख़्तियार करेगा। जैसे यहाँ पर भी जब आदमी किसी से महब्बत करता है तो उसका नतीजा क्या होता है उसकी हर अदा पसन्द की जाती है आजकल तो इस महब्बत का खेल हो रहा है जो ग़लत महब्बतें हैं उनसे फ़ाइदा उठाया जा रहा है। यह जो खिलाड़ी हैं, नाचने गाने वाले हैं इनसे हमारे नवजवानों का कितना तअ़ल्लुक है कि बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ सामान बनाती हैं या कपड़े बनाती हैं तो उसका इश्तिहार इनसे करवाती हैं अगर पहनने वाली चीज़ है तो पहना देती है कि आप पहन कर एक बार खेल लीजिये बस फिर क्या नतीजा होता है, हर नवजवान के बदन पर वही लिबास नज़र आएगा और यह कितने डर की बात है हदीस में आता है :–

जिससे आदमी को मह़ब्बत होगी उसी के साथ रहेगा। आदमी उसी के साथ होगा जिससे उसको मह़ब्बत होगी। अब अगर किसी ने अपने दिल की नाक़दरी की और किसी ऐसे को दे दिया जो जहन्नम में जा रहा है तो इसका क्या नतीजा होने वाला है? कभी कभी तो ग़ौर करना ही चाहिये कि ख़ुदा न ख़्वास्ता हश्र उन्ही के साथ न हो जिन की नक़्ल कर रहा है जिन की अदाएं इख़्तियार कर रहा है। "जिसको हो जान व दिल अ़ज़ीज़ उनकी गली में जाए क्यों" अगर आप चाहते हैं कि ग़लत रास्ते पर ना जाएं तो आप उनको क्यों देखते हैं? उनके साथ क्यों रहते हैं और उनकी अदाओं को आप कमाल की नज़र से क्यों देखते हैं, महब्बत की नज़र से क्यों देखते हैं। फिर क्या होता है महब्बत हो जाती है। इसका नतीजा क्या होगा उन्हीं के साथ हश्र होगा। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दीहाती अ़रबी रसूले पाक अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने आकर अर्ज़ किया, कियामत कब आएगी? आप ने फ़रमाया उसके लिये क्या तैयारी की है? उसने कहा "अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत करता हूँ।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिससे तुमको महब्बत होगी उसी के साथ रहोगे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अनहु बहुत ज़ियादा ख़ुश हुए। सहाब–ए–किराम के बारे में आता है वह इस बात से बहुत ख़ुश हुए वह कहते थे कि इतनी ज़ियादा ख़ुशी जब ईमान लाए थे तब हुई थी और जब यह हदीस सुनी तब, कि हम लोग उन्ही के साथ होंगे जिनसे हमको महब्बत होगी। वह उछल पड़े कि हमें अल्लाह से महब्बत है उसके रसूल से मह़ब्बत है अबू बक्र (रज़ि०) से महब्बत है, उमर (रज़ि०) से मह़ब्बत है चाहे

उन जैसे अमल न कर सकें। हज़रत अनस की इस बात से एक मसअला और हल हो गया, ज़ाहिर है कि साहिबे कमाल के कमाल तक तो हर आदमी नहीं पहुंच सकता, वह तो कामिल है उनकी हर बात उसी दर्जे में होगी जिस दर्जे में वह कामिल हैं, हम उस दर्जे में उनकी बराबरी कैसे कर सकते हैं। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि तुम में से कौन है जो रसूले पाक अ़लैहिस्सलाम के अअ़माल के मुताबिक़ अमल कर सके। आप रात को देर तक नमाज़ पढ़ते रहते थे कि पैरों में वरम हो जाता, अब लोग उस तरह नहीं पढ़ सकते लेकिन इम्कान भर कोशिश तो करते हैं कि हमारा भी पैरवी करने वालों में शुमार हो जाए। सहाब–ए–किराम के बारे में आता है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखते थे तो बेचैन हो जाते थे, क्यों? कहते थे कि अभी तो हज़रत को देख रहे हैं, जब दुन्या से हज़रत चले जाएंगे और हम भी चले जाएंगे तो हज़रत का मकाम बहुत बुलन्द होगा हम पता नहीं कहाँ होंगे, वहाँ तो ज़ियारत हो न सकेगी इसलिये हर वक़्त परेशान रहते थे लेकिन जब यह हदीस सुनी तो उनके दिल की कली खिल गई और ख़ुश हो गये।

तवज्जुह तलब बात

आजकल सब से ज़ियादा खतरनाक बात यह है जिसकी तरफ हमारी तवज्जुह नहीं है और न ही उसकी अहमियत हमारे दिलों में रह गई है वह यह है कि महब्बत की ग़ैरत और दीन की हमीयत में बहुत फर्क़ आ गया है। हममें और पुराने लोगों में जो बुन्यादी फ़र्क़ है वह यही है कि पुराने लोग चाहे अअ़माल में कोताही करने वाले हों लेकिन अल्लाह और उसके रसूल का जब नाम आ जाता था तो उनकी कैफ़ीयत बदल जाती थी। ख़ुदा न करे अगर उनकी शान में कोई गुस्ताख़ी की बात कान में पड़ जाती तो ज़िन्दगी बेकैफ़ हो जाती और जब तक उसका तदारुक (निवारण) न कर लेते चैन से न बैठते और आज कल अल्लाह और उसके रसूल का नाम आ जाता है तो कैफ़ीयत तो बदलना दूर की बात है, आज उनके मुतअ़ल्लिक़ दुन्या में बुरी बातें हो रही हैं लेकिन जिस ग़ैरत व हमीयत और जिस महब्बत की ज़रूरत है वह महसूस नहीं होती यह बड़ी खतरनाक बात है, बात यह है कि आज लोगों का दिल दूसरी जगह लगा हुआ है। कहीं माल में फंसा हुआ है कहीं जायदाद में उलझा हुआ है, कहीं बिल्डिंगों में लगा हुआ है, कहीं ग़लत क़िस्म के लोगों में फंसा हुआ है, दुन्या के धन्धों में फंसा हुआ है लेकिन जहाँ उसका दिल लगना चाहिये वहाँ से दूर है इसी को अल्लामा इक़बाल ने यूँ कहा था : "दिले दारन्द व महबूबे न दारन्द"

आजकल बीमारी क्या है दिल तो रखते हैं लेकिन महबूब किसको बनाएं दिल किसको दें, यह नहीं जानते। महब्बत भी दो तरह की होती है, एक इख़्तियारी अक़्ली दूसरी ग़ैर इख़्तियारी तबअ़ी।

मुतालबा अक़्ली महब्बत का है

मुतालबा जिस महब्बत का किया गया है वह अक़्ली महब्बत है, और अक़्ली महब्बत का मतलब होता है कि आदमी सोच समझकर महब्बत करे। हज़रत सय्यिद अहमद शहीद (रह०) ने एक मिसाल लिखी है कि जाड़े की रातों में किसान को खेत में पानी लगाना है। और वह इन्तिज़ार में है कि किसी वक़्त बारिश हो जाए, बारिश होती है रात को चाहे कितनी ही परेशानी हो, किसीन उसी हाल में उठ कर जाएगा और खेत में पानी लगाएगा और पानी इधर–उधर बह जाने से रोकेगा इसलिये कि वह जानता है कि जब खेत में पानी लगाएगा तभी ग़ल्ला पैदा होगा और ग़ल्ले से पैसा मिलेगा और ग़ल्ला खाएगा साल भर की ज़िन्दगी का सहारा इसी ग़ल्ले पर है, तो फिर चाहे वह बीमार ही क्यों न हो जाए लेकिन वह जाड़े की ठन्डी रात में उठने को बरदाश्त करेगा और खेत जाकर पानी खेत में पहुंचाएगा। ऐसे ही एक शख़्स बीमार है, उसको कड़वी दवा दी गई है, अब वह कड़वी दवा पियेगा यह नहीं कहेगा कि हम तो मीठी दवा पियेंगे। मीठी दवा हम को अच्छी लगती है कड़वी दवा हमें अच्छी नहीं लगती, वह जानता है कि इसी कड़वी दवा से उसकी बीमारी जाएगी लिहाज़ा कड़वी दवा ख़ुशी ख़ुशी पी रहा है। यही मुआ़मला शरीअ़त का है, अगर यह यक़ीन आ जाए कि शरीअ़त पर चलने से हमको क्या मिलेगा और उस पर न चलने से क्या नुक्सान होगा तो शरीअ़त पर चलना आसान हो जाएगा। पहले सोचकर आदमी महब्बत करता है फिर उस महब्बत में जो अअ़माल करता है वह आदत बन जाते हैं और अब न करने पर तक्लीफ़ होती है जैसे जो नमाज़ के आदी हो गये हैं उनकी एक वक़्त की नमाज़ छूट जाए तो उनको तक्लीफ़ होती है। अक़्ली महब्बत ही तरक़्क़ी करके तबअ़ी महब्बत बन जाती है और अब उसकी तरक्की

की रफ्तार बहुत तेज़ हो जाती है यूँ समझये कि अक़्ली महब्बत वाला ज़मीन पर चलता है और तबअ़ी महब्बत वाला फ़ज़ा में उड़ता है। तबअ़ी महब्बत वाला फ़र्ज, वाजिब, सुन्नत देखकर अअ़्माल को छांटता नहीं सब पर अ़मल करना उसकी आदत में शामिल हो गया है। लिहाज़ा चाहिये कि अक़्ली महब्बत की इतनी मश्क़ करे कि वह तबअ़ी बन जाए, आदत बन जाए। जिसका यह हाल हो जाता है वह मअ़मूली सुन्नतों को भी अदा करने में वाजिब की तरह इहतिमाम करता है लेकिन हम लोग तो बस फ़राइज़, बाजिबात और मुअक्किदा सुन्नतों तक ही रह जाते हैं। जैसे बहुत से लोग कहते हैं कि टखनों के नीचे पैजामा करना कैसा है? अक़्ली महब्बत वाला कहेगा हाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पैजामा टखनों से ऊंचा रखने को फरमाया है अगर नीचे हो जाए तो कोई हरज नहीं। जान बूझकर न करें। तबअ़ी महब्बत वाला कहेगा हम फ़र्ज़ वाजिब नहीं जानते हमारे हुज़ूर कहते थे और हुक्म देते थे हम भी करेंगे। लोग हमारे हज़रत मौलाना के बारे में पूछते हैं कि वह क्या करते थे? क्यों? इसलिये कि उनसे महब्बत है। इसी तरह जब अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत हो जाती है तो आदमी यह सब कुछ नहीं देखता, देखता बस यहा है कि हमारे हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या फरमाते थे, क्या हुक्म किया है फिर उस पर अमल करने में कोई तकलीफ़ नहीं होती।

जब अल्लाह से महब्बत हो जाती है तो कोई बड़ी से बड़ी मुसीबत आ जाए, कैसी ही परेशानी की बात आ जाए, एक नज़र ऊपर उठाकर देखेगा कि कहां से आया है, अल्लाह ने भेजा है, बस सब ख़त्म और समझता है कि यह तो अल्लाह की निअ़मत है, इसीलिये अल्लाह के मक्बूल बन्दे जब बीमार न हों, तक्लीफ़ का सामना न हो तो परेशान होते हैं कि कहीं अल्लाह तआ़ला ने रुख़ तो नहीं फेर यिा, इसलिये कि बीमार होने से तरक़्की होती है, उससे गुनाह धुल जाते हैं, गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता ळे दरजात बुलन्द होते हैं, अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत हो जाए तो तरक्की की कोई इन्तिहा नहीं, कोई परेशानी नहीं, एक ख़ुशी का आलम रहता है जिस्म अगर तक्लीफ़ में है तो दिल शादमान है।

हासिल जिसे महबूब का फ़ैज़ाने करम है
दिल उसका कभी तूर कभी जाने हरम है।।
रहता है बहर हाल वह फिर्दौस बदामा।
जिसको भी मुक़ददर से मिली लज़्ज़ते ग़म है।।

इसीलिये हुक्म दिया गया कि अल्लाह और उसके रसूल से मह्ब्बत की जाए।

●●●

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara
Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

अपने ग़ैर मुस्लिम पाठकों से अनुरोध

हमारा "सच्चा राही" हमारे ग़ैर मुस्लिम भाई भी पढ़ते हैं और कभी कभार वह लाभदायक टिप्पणियों तथा परामर्शों से सहयोग भी देते हैं। हम ऐसे सभी ग़ैर मुस्लिम भाइयों से अनुरोध करते हैं कि वह कृपा करके एक पोस्ट कार्ड द्वारा अपने नाम व पते से अवगत कराएं वह आज्ञा देंगे तो हम उनके नाम व पते सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे तथा उनके परामर्शों पर ध्यान देंगे। हम उनके सामाजिक, ऐतिहासिक तथा आयुर्वेदिक लेखों का स्वागत करेंगे। हम आपके केवल पचास पैसे के एक कार्ड की प्रतीक्षा करेंगे।

सम्पादक सच्चा राही
पो० बाक्स ९३
नदवा—लखनऊ

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : गूंगे आदमी का निकाह किस तरह होगा?

उत्तर : गोंगे का ईजाब या क़बूल उसके उस इशारे के ज़रीअे होगा जिस इंशारे से वह कोई चीज़ क़बूल करता है। (आलम गीरा जिल्द १ पृष्ठ २७०)

प्रश्न :ईजाब व क़बूल किसे कहते हैं?

उत्तर : निकाह के वक़्त दूल्हा या उसका वकील दूल्हन के वकील से दो गवाहों के सामने कहे कि मैंने फ़ुलां बिनत फ़ुलां को इतने महर में अपने निकाह में ले लिया, तो यह ईजाब हुआ, लड़की का वकील कहे मैंने क़बूल किया, यह क़बूल है। इसी तरह लड़की का वकील दो गवाहों के सामने कहे कि मैंने फ़ुलां बिनत फ़ुलां को इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, यह ईजाब है। अब दूल्हा कहे मैंने क़बूल किया यह क़बूल है। मतलब यह कि निकाह के मुआहदे में जो कलिमात पहले कहे जाते हैं वह ईजाब हैं चाहे लड़के की जानिब से कहे जाएं या लड़की की जानिब से और दूसरी जानिब से जो अलफ़ाज़ कहे जाते हैं वह क़बूल है।

प्रश्न : क्या ईजाब व क़बूल के लिये दो गवाह ज़रूरी है?

उत्तर : हाँ निकाह के ईजाब व क़बूल के वक़्त दो आक़िल (बुद्धिवाले) बालिग़ (वयस्क) मर्द मुसलमानों की गवाही ज़रूरी है, दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें हों। सिर्फ़ औरतें चाहे जितनी हों एक मर्द की मौजूदगी के बिना गवाही पूरी न होगी। ना बालिग़, या पागल, या ग़ैर मुस्लिम की गवाही निकाह में नहीं मानी जाती है।

प्रश्न : निकाह के ईजाब व क़बूल में महर का ज़िक्र न हो तो निकाह होगा या नहीं।

उत्तर : महर के ज़िक्र के बिना निकाह तो हो जाएगा लेकिन दूल्हा को महरे मिस्ल देना ज़रूरी होगा।

प्रश्न : महरे मिस्ल किसे कहते हैं?

उत्तर : लड़की के ख़ान्दान की उसी तरह की लड़की का जो महर हो उसको महरे मिस्ल कहते हैं।

प्रश्न : क्या टेलीफ़ोन के ज़रीअे निकाह हो सकता है?

उत्तर : टेलीफोन के ज़रीअे निकाह नहीं हो सकता, अलबत्ता टेलीफोन के ज़रीअे वकील बनाया जा सकता है, फिर वकील दो मुस्लिम आक़िल बालिग़ मुस्लिम मर्द गवाहों के सामने ईजाब व क़बूल करा दे तो निकाह हो जाएगा लेकिन शर्त यह है कि दोनों गवाह लड़की लड़के को जानते हों।

प्रश्न : क्या वकील के द्वारा भी निकाह हो जाता है?

उत्तर : हाँ लड़का या लड़की बालिग़ हों और वह किसी को अपने निकाह का वकील बना दे तो वकील दो गवाहों के सामने ईजाब व क़बूल करा सकता है और हमारे यहाँ लड़की की जानिब से आम तौर से वकील ही निकाह पढ़ाता है यह निकाह पढ़ाने वाला क़ाज़ी लड़की का वकील ही तो होता है।

प्रश्न : आम तौर से निकाह के लिये तीन आदमी एक वकील दो गवाह लड़की के पास जाकर निकाह पढ़ाने की इजाज़त लेते हैं, लड़की ख़ामोश हो जाती है। इसी को इजाज़त समझ लेते हैं क्या यह सहीह है?

उत्तर : नहीं यह सहीह नहीं है। अगर लड़की का वली इजाज़त ले तो उसकी ख़ामोशी इजाज़त समझी जाएगी, गैर वली इजाज़त ले तो ज़बान से इजाज़त देना ज़रूरी है। (हिदायः जिल्द २ पृष्ठ २९४)

अलबत्ता अगर शरअी वली किसी को इजाज़त दे कि तुम मेरी तरफ़ से इजाज़त ले लो तो इस सूरत में लड़की की ख़ामोशी इजाज़त हो जाएगी इसलिये कि इजाज़त लेने वाला वली की इजाज़त से उसी की तरफ़ से इजाज़त ले रहा है।

निकाह आधा दीन है

Mohd. Saleem
Mob. : 9415782827
(R) 268177, 254796

New King Shoes

Bata, Liberty Action, Red Chief

Shop No. 8-9, New Market,
Nishat Ganj, Lucknow-226006

क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही?

मुहम्मद कुत्ब

आधुनिक साइंस की चमतकारी सफलताओं ने पश्चिमी दुन्या पर कुछ ऐसा जादू कर दिया है कि अब उन में यह ख़्याल आम हो गया है कि साइंस ने धर्म को हमेशा के लिए प्रास्त कर दिया है क्योंकि इसकी लाभदायिक्ता समाप्त हो चुकी है। मशहूर मनोवैज्ञानिकों में से लगभग सभी ने इस प्रकार के विचार जाहिर किये हैं। मशहूर यूरोपीय मनोवैज्ञानिक (माहिरे नफ़सियात) फ्राईड ने दीन के प्रचार व प्रसार की कोशिशों का मजाक उड़ाते हुए लिखा : इंसानी जिन्दगी तीन स्पष्ट मनोवैज्ञानिक युगो से गुज़रती है : १. वहशत (बरबरता) का युग २. मज़हब का युग ३. और साइंस का युग। अब साइंस का युग है अतएव मज़हब की बातों में अब कोई सार्थकता नहीं। वह निरर्थक (बेकार) हो चुका है और अपनी तमाम क़द्र व कीमत खो चुका है"

मज़हब दुश्मनी की असल वजह

यूरोपीय साइंसदानों के मजहब विरोधी होने का असल कारण वह मुखालफत थी जो यूरोपीय कलीसा के द्वारा उन्हें पेश आई थी। इस मुखालफत में कलीसा वालों ने जिस स्वभाव का प्रदर्शन किया, उसको देखकर यह लोग यह समझने लगे कि मजहब प्रतिक्रियावाद (रजअत पसन्दी) बरबरता, अन्धविश्वास और निरर्थक विचारों और क्रियाकलापों का संग्रह है (बेमानी अफ़कार और आमाल का मजमूआ है) इसलिए अच्छा यही हो कि हमेशा हमेशा के लिए इसका किस्सा तमाम कर दिया जाए। और साइंस को आगे बढ़ाया जाए ताकि इसके पथप्रदर्शन (रहनुमाई) में मानवता और सभ्यता का विकास जारी रह सके।

यूरोप की अन्धे पैरवी करने वाले

यह था मजहब से यूरोपीय साइंसदानों के विरोध का मुख्य कारण मगर मजहब के कुछ मुसलमान विरोधी न इस वास्तविक कारण को समझते हैं और न पूर्व और पश्चिम के हालात के अन्तर ही को ध्यान में रखते हैं और मज़हब की मुखालफत करने लगते हैं। उनकी मुखालफत किसी गहरे सोच विचार का नतीजा नहीं है बल्कि यूरोप की अन्धी पैरवी की पैदावार है। उनके नज़दीक उन्नति व कमाल की केवल वही एक राह है जिस पर यूरोप की क़ौमें चल रही हैं। उन्हों ने मज़हब से पीछा छुड़ा लिया है इसलिए हमें भी मजहब की पैरवी को त्याग देना चाहिए अन्यथा लोग हमें जंगली होने का ताना देंगे।

दुर्भाग्य से यह हजरात भूल जाते हैं कि यूरोप के विद्वान भी मज़हब की दुश्मनी में न पहले कभी पूरी तौर से एकमत थे न अब हैं। बल्कि बाज़ चोटी के यूरोपीय विद्वान जो धर्म विरोधी सभ्यता से अप्रसन्न हैं इस वास्तविकता का बरमला इजहार करते हैं कि मजहब इंसान की नागुज़ीर मनौवैज्ञानिक (नफसियाती) और अक़ली ज़रूरत है।

यूरोपीय विद्वानों की शहादत

इन विद्वानों में सबसे अधिक मशहूर नाम खगोल शास्त्री (माहिरे फलक्यात) जेम्स जीन का है। जेम्स ने जिन्दगी की शुरूआत एक नास्तिक (मुलहिद) भ्रमिक नवजवान की हैसियत से की परन्तु अपनी वैज्ञानिक रिसर्च के बाद वह अन्ततः इस नतीजे पर पहुंचा कि मज़हब इंसानी ज़िन्दगी की नागुज़ीर ज़रूरत है क्योंकि खुदा पर ईमान लाए बिना साइंस की बुनियादी समस्याएं हल ही नहीं की जा सकतीं। प्रसिद्ध नागरिक शास्त्री (माहिरे इमरानियात) जीन्स ब्रिज तो मज़हब के पक्ष में इस क़दर आगे बढ़ गए कि उन्होंने माद्दियत (भौतिकता)और रूहानियत(अध्यामिकता) के सामंजस से विश्वास तथा क्रियाकलाप (अकीदा व अमल) के एक संतुलित व्यवस्था की रचना पर दिल खोल कर इस्लाम की प्रशंसा की है। इंगलिस्तान के मशहूर साहित्यकार सोमरसेट माहम ने मजहब के बारे में आधुनिक यूरोप के नकारात्मक रवय्ये को इन शब्दों में बयान कियास है "यूरोप ने अपने लिए एक नये खुदा साइंस की खोज कर ली है और अपने पुराने खुदा से मुंह मोड़ लिया है।

यूरोप का नया खुदा

मगर यूरोप का यह खुदा इंतिहाई परिवर्तनशील निकला। यह हर क्षण परिवर्तन के निशाने पर है और इसका सिद्धांत बराबर तबदीली का शिकार है। एक चीज को वह आज हकीक़त कहता है और कल को उसे झूठ, धोखा और गलत करार देने लगता है। परिवर्तन का यह चक्र यूं ही चलता रहता है। वह कभी ख़त्म नहीं होता

और इसके पुजारी भी हमेशा परेशानी में घिरे रहते हैं। वर्तमान पश्चिमी दुन्या पर आज बेचैनी और परेशानी के जो बादल छाए हैं और जिस प्रकार वह तरह तरह की मनोस्थिति और तनाव से ग्रस्त है, वह उसके असल रूहानी मर्ज़ के केवल जाहिरी लक्षण है।

साइंस की नई दुन्या

साइंस को खुदा के पद पर बैठा देने का एक और नतीजा यह निकला कि यह दुन्या, जिसमें आप रह रहें हैं, किसी स्पष्ट उद्देश्य और अपनी सार्थकता से वंचित हो गई। इसकी न तो कोई उच्च सार्थकता है न व्यवस्था न कोई प्रधान सत्ता या ताक़त ही यहाँ ऐसी मौजूद है जो दुन्या का मार्गदर्शन कर सके। यहाँ पर विरोधी शक्तियों के बीच स्थाई कशमकश (खींचातानी) बरपा है। यहाँ की हर चीज परिवर्तन की शिकार है। आर्थिक या राजनीतिक व्यवस्था हो या हुकूमत या लोगों के बीच सम्बन्ध यहाँ की हर चीज़ बदल जाती है। यहाँ तक कि साइंसी हक़ीक़तें भी बदल जाती हैं। जाहिर है कि इस अन्धेरी और भयानक दुन्या में इंसान को हमेशा बेचैनी और परेशानी के सिवाय कुछ हासिल नहीं हो सकता विशेषतः जबकि उसका वातावरण किसी उच्चतम हस्ती की कल्पना से खाली हो कि जब *ज़िन्दगी की बेराह द्वन्द्व* (कशाकश) से वह घबराए तो उसके दामन में पनाह ले, हौसला और चैन पा सके।

मज़हब और केवल मज़हब ही दुन्या के खोए हुए अमन चैन को उपलब्ध करा सकता है। वह इंसान के दिल में सत्य प्रेम पैदा करके उसकी बुराई और अत्याचार के सामने डट जाने का हौसला प्रदान करता है और उसको बताता है कि अगर वह अपने रब की प्रसन्नता की तलब रखता है तो उसको बुराई के प्रभुत्व (ग़लबा) और सत्ता के बुत को टुकड़े–टुकड़े करके धरती पर केवल अपने रब का शासन कायम करना चाहिये। उसको इस राह में हर तरह की कठिनाईयाँ और कष्ट को दृढ़ता और सब्र से बर्दाश्त करना चाहिये और केवल आखिरत (प्रलोक) पर नज़र रखना चाहिये। फिर क्या आज की दुन्या को अमल चैन की, सुखसंतोष की और दूसरे शब्दों मे मजहब की ज़रूरत नहीं है?

मज़हब के बिना जीवन की सार्थकता सिरे से बाकी नहीं रहती। मज़हब की बुनियादी विशेषता आख़िरत (प्रलोक) पर विश्वास है। इस विश्वास के बाद पृथ्वी पर इंसान की ज़िन्दगी नई विशालता के दामन को छूने लगती है और मनुष्य के सामने समभावनाओं के नये–नये मार्ग खुलने लगते हैं कि वह अगर न हों तो वह कुंठा का शिकार हो जाए। जीवन के बाद मृत्व के इंकार का मतलब यह है कि इंसान की सामुहिक उम्र में ही एक बड़ा भाग निकाल दिया जाए और उसे अनधी बहरी इच्छाओं तथा अन्धविश्वास पर छोड़ दिया जाए। इस के बाद इंसान काम इच्छाओं की पूर्ति में गुम हो जाता है और उस की कोशिशों का उद्देश्य केवल यह रह जाता है कि जितनी खुशियाँ वह समेट सके समेट ले और किसी को उन में शरीक न करे। यहीं से शत्रुता और बरबरता पूर्ण जंगें जन्म लेती हैं क्योंकि इच्छा के गुलामों की इस दुन्या में हर कोई लूट के माल पर बढ़–बढ़ कर हाथ साफ करना चाहता है और अधिक से अधिक लाभ कम से कम समय में खुद समेट लेना चाहता है। उसके दिल में ऊपर वाले का भय नहीं होता क्योंकि इस दुन्या का न तो कोई खुदा होता है और न कोई न्याय व्यवस्था और न अपने कर्मों की सजा की भावना।

रोशनी का मीनार

मज़हब इंसान को अपने लिए जीने के बजाए दूसरों के लिए जीना सिखाता है। उसे एक उंच्च व पवित्र उद्देश्य देता है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मुसीबतों तथा दुःखों को प्रसन्नता पूर्वक स्वागत करना सिखाता है। अगर इंसान मज़हब के बख्शे हुए इस ईमान व विश्वास से वंचित हो जाए तो फिर वह अपने आप के सिवा किसी और तरफ देख ही नहीं सकता। उस की सारी ज़िन्दगी स्वार्थ और स्वेच्छा चारी (खुदपसंदी) की प्रतिरूप बन जाती है। और उस में और फाड़खाने वाले पशुओं में कोई अन्तर बाकी नहीं रहता। इतिहास में अनगिनत ऐसे इंसान गुजरे हैं जो उम्र भर सत्य व सच्चाई के लिए संघर्ष करते रहे और अपनी जान तक उसके लिए निछावर कर दी। उन्हें अपने संघर्ष और कुर्बानियों का फल इस दुन्या में न मिला।

प्रश्न यह है कि आखिर किस चीज ने उन लोगों को एक ऐसी लड़ाई मोल लेने पर आमादा किया जिसके नतीजे में न केवल यह कि उन्हें कोई आर्थिक सफलता प्राप्त हुई बल्कि जो कुछ उनके पास था, इस लड़ाई के बाद वह भी उनके हाथ से जाता रहा? इसका उत्तर केवल एक ही है और वह है ईमान ! इन पवित्र आत्माओं का वजूद इसी ईमान का एक तुच्छ चमत्कार है। इसके विपरीत लालच, द्वेष, वैमनस्य

(बुग्ज़ व कीना) स्वार्थ और नफरत ऐसे घटिया प्रेरक हैं कि उनके द्वारा कोई हक़ीक़ी और पाएदार कामयाबीर हासिल नहीं हो सकती। उन की चमक बदमक दिखावटी और अस्थाई होती है। इसके कारण इंसान फौरी लाभ चाहता है जिसका नतीजा यह होता है कि इंसान में कभी स्वस्थ आचरण नहीं उभर सकता और न उसमें किसी उच्च उद्देश्य की ख़ातिर संसार को तजकर सब्र व दृढ़ता से लम्बी अवध तक मुसलसल संघर्ष का जज़्बा परवान चढ़ सकता है।

प्रलोक पर विश्वास का एक महत्वपूर्ण पक्ष

जिस अकीदः (विश्वास) का आधार महब्बत के बजाए नफरत पर हो उससे इंसानियत को कभी भलाई व सुधार प्राप्त नहीं हो सकता। इससे समाज की बाज़ बुराइयाँ और मौजूदा बेइंसाफियों का बिला शुबहा किसी हद तक निवारण हो जाता है मगर इसका दामन इंसानियत की इन बीमारियों के किसी ठोस उपचार से बिल्कुल खाली होता है। यही कारण है कि यह सुधार के उपाय जो समाज की मौजूदा खराबियों के इलाज के नाम पर इख्तियार किये जाते हैं उन्हें घटाने और उन पर काबू पाने के बजाय उलटा उन्हें कई गुना और अधिक बढ़ा देते हैं और वही दशा पैदा हो जाती है कि— मर्ज़ बढ़ता गयसा ज्यूं—जयूं दवा की।

इस के विपरीत जिस अक़ीदे में (विश्वास) में फौरी आर्थिक लाभ का उद्देश्य नहीं होता और द्वेष व शत्रुता (बुग्ज व अदावत) उसकी पैदाइश की प्रेरक नहीं होती है बल्कि इंसानों में प्रेम, भाईचारा और त्याग यहाँ तक कि इंसानों के लिए अपनी जान की कुर्बानी पेश करने का जज़्बा पैदा करता है और वास्तव में यही अकीदा इंसानियत को हक़ीक़ी और पायदार सुख सुविधाओं से मालामाल कर सकता है और भविष्य की खुशहाली और प्रगति का सहारा बन सकता है। इस अकीदे का सार खुदा पर ईमान और उसकी महब्बत होती है जो इंसान के जीवन में पवित्रता बख्शती और अपने पैदा करने वाले से निकट सम्बन्ध स्थापित करती है मगर प्रलोक पर ईमान के बिना खुदा पर ईमान या उस से प्रेम का कोई अर्थ नहीं है। प्रलोक का ख़्याल इंसान में एक प्रकार की सुरक्षा की भावना पैदा करता है, उसे प्रलोक के स्थाई जीवन का शुभ समाचार देता है। इसके बाद इंसान को इस यकीन की ज़मानत मिल जाती है कि अपने जिस्मानी मौत के साथ वह नेस्त व नाबूद (विनष्ट) नहीं हो जाएगा न उसके जीवन के क्रियाकलापों में उसकी जद्दोजेहद (भागदौड़) विफल रहेगी बल्कि उसको उसका बदला इस संसार में न मिला तो आने वाले जीवन में तो हर हाल में मिलकर रहेगा। यह है वह फल जो एक खुदा और आखिरत पर ईमान के वृक्ष से पैदा होते हैं। मगर इस्लाम केवल इन्हीं को पर्याप्त नहीं मानता बल्कि इसके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ हमें प्रदान करता है इसकी कहानी और कहानियों से भिन्न और कहीं अधिक सुन्दर और आकर्षक है। (जारी)

उर्दू से अनुवाद — हबीबुल्लाह आज़मी

●●●

मदीने सर के बल जाना

मौ० मुहम्मद सानी हसनी

मदीने जाने वाले सुन
मदीने सर के बल जाना।
कभी होशो ख़िरद खोना
कभी कुछ कुछ संभल जाना॥
दरे अक्दस पे कहना,
कह के रोना और मचल जाना।
तमन्ना है दरख़्तों पर,
तेरे रौज़े के जा बैठे
क़फ़स जिस वक़्त टूटे
ताइरे रूहे मुक़य्यद का
ख़ुदा के ज़िक्र को हम ने
हर इक मुश्किल का हल जाना
तेरे दर हाज़िरी को
ज़िन्दगी का माहसल जाना
मुबारक है तेरे दर पर
किसी का दम निकल जाना
तमन्ना है दरख़्तों पर
तेरे रौज़े के जा बैठे
क़फ़स जिस वक़्त टूटे
ताइरे रूहे मुक़य्यद का
तेरे दर पर शहे वाला
न जाने कितनी बार आए
करें क्या अर्ज़ आक़ा कितने हम
ज़ारो नज़ार आए
बहुत ही बे क़रार आए
बहुत ही अश्कबार आए
तमन्ना है दरख़्तों पर
तेरे रौज़े के जा बैठे
क़फ़स जिस वक़्त टूटे
ताइरे रूहे मुक़य्यद का

इस्लामी समाज की चित्रकारी और इस्लामी संघटनें

मुहम्मद जसीमुद्दीन कासिमी

तब्लीगी जमाअत ईमान की शुद्धता के साथ इस्लामी कर्म के आधार पर जीवन में बदलाव लाने की सदैव चेष्ठा तथा प्रयास करती रही है अतएव भारत तथा विदेशों में तब्लीगी जमाअत के परिश्रम तथा प्रयासों के परिणाम में मुसलमानों के धार्मिक जीवन पर विशाल प्रभाव पड़ा है, यह प्रभाव नर, नारी, युवा तथा विद्यार्थी सब पर पड़ा है।

हजरत मौलाना इल्यास (रह०) जिस प्रकार पुरुषों में दीनी दअ़वत (धर्म निमंत्रण)का काम आवश्यक बताते थे उसी प्रकार स्त्रियों में भी इस लिये कि स्त्रियों के सुधार से पुरूषों तथा बालकों में धार्मिक क्रान्ति उत्पन्न होती है। तब्लीगी जमाअत ने विशेषकर विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों में दअ़वत (धार्मिक निमंत्रण) को बड़ी उन्नति दी। अलीगढ़र विश्वविद्यालय के हर छात्रावास की मस्जिद, मुअज्जिन, इमाम तथा धार्मिक विषयों के संरक्षण हेतु प्रबन्धक के अस्तित्व इस पर साक्षी हैं। सैकड़ों छात्र जो बौद्धिक भोग विलास में मग्न थे उनमें ईश भक्ती, नमाज़े बा जमाअत, नवाफिल का आयोजन, जन सेवा तथा रंग रूप में इस्लामी पहचान बनाये रखने के गुणों से युक्त हो गये।

तहरीके जमाअ़ते इस्लामी हिन्द ने इस्लामिक विश्वास तथा उपासनाओं के साथ दीन की व्यापक कल्पना (आफाकी तसव्वुर) प्रस्तुत की। जिस की इस्लाम अपने मानने वालों से मांग करता है। जमाअते इस्लामी हिन्द के संस्थापक ने कहा कि : "इस्लाम केवल एक विश्वास नहीं है ना ही यह कुछ धार्मिक कर्मों तथा प्रथाओं का संग्रह है अपितु वह मानव जीवन हेतु एक विस्तृत योजना है। इस में विश्वास, उपासनाएं व्यवहारिक जीवन के सिद्धान्त तथा नियम अलग अलग वस्तुएं नहीं हैं। अपितु सब मिलकर एक अविभाज्य संग्रह है जिसके अंशों का पारस्परिक सम्बन्ध वैसा ही है जैसा कि एक जीवित शरीर के अंगों में होता है।" इस विचार के अन्तर्गत जमाअते इस्लामी हिन्द की दअवत (इस्लाम की ओर बुलाना) और लिट्रेचर के प्रसारण ने मुसलमानों के धार्मिक ज्ञान (तसव्वुरे मजहब) तथा धार्मिक जीवन (मजहबी जिन्दगी) पर भारी प्रभाव डाला।

मुसलमानों के विचार तथा दृष्टि में बदलाव आया और उनके धार्मिक जीवन की दिशा बदल गई। लम्बे काल के शैथिल्य तथा ठहराव को तोड़ा, उदासीनों और उद्देश्यों रहित लोगों को गतिशील (मुतहर्रिक) कर्मठ (जफाकश) ओजस्वी (ताकतवर) तथा उद्देश्य युक्त (बा मक्सद) बना दिया तथा अपनी क्रान्तिकारी लेखनी (इन्किलाबी कलम) और मिशन की शक्ति से मुसलमानों के हृदय में इस्लाम की सर्व व्यापी तथा विश्वव्यापी स्थिति हेतु, दृढ़ भावना, लगन, त्याग तथा बलिदान को उन्नति दी। तात्पर्य यह है कि भारत के सभी इस्लामी संस्थाओं ने अपने अपने दृष्टिकोण के अनुसार समाज सुधार की ओर ध्यान दिया और अपने प्रयासों से उसे प्रभावित किया और बड़े कठिन काल में इस्लामी संस्थाओं ने मुस्लिम समाज को नास्तिकता तथा धर्म विमुखता (कुफ़्र व इलहाद) की गोद में जाने से रोक दिया मुस्लिम समाज में जो भी बुराइयां आ गई थीं और जो बिगाड़ आ गया था उस को समाप्त किया और मुस्लिम घरानों को शिर्क व बिदअ़त, जिहालत और अशिक्षता के भर्त्सना (लअ़नत) से निकाला। तब्लीगी जमाअत और जमाअते इस्लामी हिन्द ने समाज के महत्वपूर्ण खम्भ नारियों तक अपने नेटवर्क को विस्तृत कर के तथा उनके वृत्त (हल्के) स्थापित करके समाज सुधार की श्रृंखला (सिलसिले) में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्हीं इस्लामी संघटनों द्वारा आज भारतीय मुसलमान इस्लाम से जुड़े दिख रहे हैं तथा धार्मिक (इस्लामिक) भावनाओं से मदोन्मत्त (सरशार) हैं।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

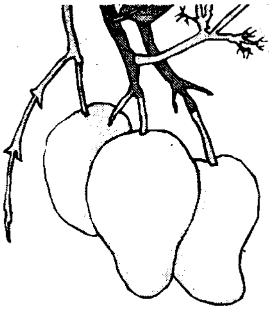

आम

इदारा

आम भारत और पाकिस्तान का मशहूर फल है। इसकी दो किस्में हैं कलमी और तुख़्मी। कच्चे आम को जब तक उसमें गुठली नहीं पड़ती "कैरी" कहते हैं। कच्चे आम का मज़ा खट्टा होता है और पक्के आम का मीठा और मज़ेदार कुछ आम खट मिट्ठे भी होते हैं। पक्के हुए तुख़्मी आम का रस चूसा जाता है और क़लमी आम को काटकर खाया जाता है। यह तुख़्मी के मुक़ाबले में देर में पचता है। पक्का आम तुख़्मी हो या क़लमी बदन को ताकत देता और उसकी परवरिश (पोषण) करता है और क़ब्ज़ को दूर करता है लेकिन कलमी किसी हद तक काबिज़ होता है। कलमी आम खूब पेट भर कर न खाएं और खाकर थोड़ा मीठा दूध पी ले तो आसानी से पच जाता है।

नई तहक़ीक़ात (जांच) से आम मे विटामिन सी बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है इसमें कुछ विटामिन ए भी होता है। इन गिजाई जौहरों की वजह से आम बदन की परवरिश खासकर बच्चों की बढ़ोतरी के लिये लाभदायक फल है। आम को नहार मुंह (सुबह को बे कुछ खाए) खाना मुनासिब नहीं, खाना खाने के बअ़द या तीसरे पहर खाएं। आम खाने के बअ़द दूध पी लेने से उसके फाइदे बढ़ जाते हैं, अगर आम खाने के बअ़द कुछ जामुने खा ली जाएं तो आम जल्द हज़्म हो जाता है।

कच्चा आम लू से बचाता है कच्चा आम भूभुल में दबा दें जब वह पक जाए तो निकाल लें और राख साफ करके उसका गूदा पानी में घोल लें फिर उसमें खान्ड या मिस्री मिलाकर लू लगे हुए को पिलाएं, मुम्किन हो तो उसमें थोड़ा क्योड़े का अरक भी मिला लें। आम की गुठली की मेंग (गिरी) क़ब्ज़ करती है खासकर पुरानी गुठली की गिरी ज़ियादा काबिज़ होती है। इसको बारीक पीसकर तीन तीन ग्राम ताज़ा पानी के साथ खाने से दस्त रुक जाते हैं।

हैज़ (माहवारी) ज़ियादा जारी हो खूनी बवासीर में खून बहुत निकल रहा हो तो इस से वह भी रुक जाते हैं। सूगर के रोगी के पेशाब की अधिकता भी इससे कम हो जाती है। आम का अचार बड़ा लज़ीज़ (स्वादिष्ट) और हाज़िम (पाचक) होता है।

अमरस : आम का रस निचोड़कर साफ कपड़े पर फैला कर तेज धूप में सुखा लेते हैं, इसको अमरस कहते हैं। अमरस भिगोकर उसमें नमक मिर्च मिलाकर स्वादिष्ट चटनी बनाई जाती है। तुख़्मी आम का आमरस आसानी से बनता है। आमरस सुखाकर सरसों का तेल लगाकर मर्तबान में रख लेते हैं और जरूरत पर इस्तेमाल करते हैं।

लू लगना Sun Stroke

सख़्त गर्मी और लू चलने के ज़माने में धूप में चलने फिरने से लू का असर हो जाता है, कभी तो इसका असर इतना ज़ियादा होता है कि मरीज़ बेहोश हो कर गिर पड़ता है और कभी तुरन्त मर जाता है।

पहचान : प्यास बहुत तेज़ लगती है पूरे जिस्म और सिर में दर्द होता है, तेज़ बुखार भी आ जाता है, आखें लाल और खाल खुश्क हो जाती है, सांस जल्दी जल्दी चलती है। कभी सरसामी कैफीयत हो जाती है और वह आव बाव बकने लगता है, इसी हाल में कभी मौत हो जाती है।

बचाव : लू के दिनों में बाहर जाना पड़े तो पानी खूब पीकर निकलें। सर और गरदन पर तौलिया या मोटा कपड़ा लपेट कर निकलें। गर्मी के मौसम में गोश्त, अन्डा, मछली कम खाएं। पुदीना, सिर्का, आम की चटनी, दही छाछ और प्याज़ का इस्तिअ़माल ज़ियादा करें। इन इहतियातों के बअ़द भी अगर किसी को लू लग जाए तो मरीज़ को किसी ठन्डी जगह पर लिटाएं। कपड़े ढीले कर दें। हाथ या बिजली के पंखे से हवा करें अगर बर्फ मिल सके तो उससे सर और जिस्म को ठन्डक पहुंचाएं बर्फ न मिले तो ठन्डे पानी ही से ठन्डक पहुंचाएं।

कच्चा आम भून कर उसका गूदा पानी में घोलकर पिलाएं, इम्ली, आलू बुखारा पानी में पीसकर पिलाना मुफीद है, लीमू निचोड़कर पानी में मिलाकर पिलाना बहुत ही लाभदायक है। मुम्किन हो तो बिना देर किये किसी अच्छे डाक्टर, हकीम या वैद्य से इलाज

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

मुसलमान सारी दुनिया के लिये रहमत

मौ० सईद अहमद अकबराबादी

नई नस्ल का दीनी, तालीम (धार्मिक शिक्षा) से वंचित रह जाना एक बहुत बड़ी दुर्घटना है जिसका असर न सिर्फ मुसलमानों पर पड़ेगा बल्कि देश राष्ट्र और सारी दुनिया पर पड़ेगा, क्योंकि एक सच्चा मुसलमान सारी दुनिया के लिये रहमत होता है। अगर दीनी तालीम न होने के कारण हमारे बच्चे मुसलमान बन कर नहीं उठे तो दुनिया एक बड़ी रहमत से वंचित रह जायेगी। अगर मुसलमान दीनी तालीम से वंचित रहे तो इससे उनको भी नुक़सान पहुंचेगा और मुल्क को भी क्योंकि मुसलमान अगर सच्चे मुसलमान बनेंगे तो किरदार के लिहाज़ से बुलन्द होंगे और दियानतदार और खुदा से डरने वाले होंगे, ऐसी सूरत में वह मुल्क की ज़ियादा ख़िदमत कर सकेंगे। मुसलमान की ज़िन्दगी में कभी निफ़ाक़ (दोगलापन) और दोरंगी पैदा नहीं हो सकती क्योंकि इसका अक़ीदा है कि खुदा न सिर्फ़ जाहिरी आमाल बल्कि इरादा व नीयत और भावनाओं से भी बाख़बर होता है इसलियें मुसलमान की ज़ात से ऐसा कर्म हो ही नहीं सकता जो फ़साद का कारण हो। हमारी शिक्षा व्यवस्था सेकुलर है और ऐसी व्यवस्था इन्सान को मुकम्मल इन्सान नहीं बना सकती। मुकम्मल इन्सान वही तालीम बना सकती है जिसमें मज़हब का भी अंश मिला हो। मौजूदा (१९५६) व्यवस्था की इस कमज़ोरी को सिर्फ मुसलमान ही महसूस नहीं कर रहे हैं बल्कि हिन्दू और सिख और दूसरे समुदाय के लोग भी इस बात की फिक्र में हैं कि इस तालीम में अपनी तरफ से दीनी तालीमात का सिलसिला जोड़ दें। आज विद्यार्थियों में जो बेचैनी और बिगाड़ है उसका कारण यह है कि उनके एहसास और सोच में अख़लाक (आचरण) और ख़ुदापरस्ती नहीं है जब तक इन दोनों तत्वों को किसी न किसी तरह तालीम में शामिल न कर देंगे विद्यार्थियों की मानसिक बेचैनी की गुत्थी न सुलझ सकेगी। (अतः सभी समुदाय के लोग निजीतौर पर अपने अपने बच्चों की धर्म शिक्षा का प्रबन्ध करें।)

(प्रान्तीय दीनी तालीम कान्फ्रेन्स बस्ती दिसम्बर १९५६ के अध्यक्षीय भाषण से उद्धरित।

प्रस्तुती : हसन अन्सारी)

अब्दुर्रशीद खैरानी

भलाई के कामों में मदद करना

अल्लाह तआला की किताब कुरआन मजीद की सूरः माईदा की आयत नम्बर दो में फरमान है–

और लोगों की दुश्मनी इस वजह से कि उन्होंने तुमको इज्जतवाली मस्जिद से रोका था, तुम्हें इस बात पर तैयार न करे कि तुम उन पर ज़ियादती करने लगो। और (देखो) नेकी (भलाई) और परहेजगारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह व जुल्म के कामों में मदद न किया करो और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह का अज़ाब (सजा) सख्त है!

अल्लाह तआला अपने ईमान वाले बन्दों को नेकी के कामों में एक दूसरे को मदद करने को फरमा रहा है और गुनाहों, हराम कामों और किसी पर भी जुल्म व ज़ियादती करने से मना किया है। मुसनद अहमद की एक हदीस में है कि अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुवाल हुआ कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मजलूम (जिस पर ज़ियादती हुई) होने की सूरत में मदद करना तो ठीक है लेकिन जालिम (ज़ियादती करने वाला) होने की सूरत में कैसे मदद करें। फरमाया– उसे (यानी जुल्म करउने वाले को) जुल्म न करने दो, जुल्म करने से रोक दो, यही उसकी (ज़ालिम की) मदद है। मुसनद अहमद में है जो मुसलमान लोगों से मिले जुले और उसकी तरफ से पहुचने वाली तकलीफ़ों पर सब्र करे वह उस मुसलमान से ज्यादा बदला पाने वाला है जो न लोगों से मिले जुले और न उनकी तरफ से पहुंचने वाली तकलीफ़ों में सब्र करे।

मुसनद की हदीस में है कि जों शख़्स किसी भली बात की हिदायत दूसरे को करे वह उस भलाई करने वाले ही की तरह है! तबरानी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़ालिम के साथ जाए ताकि उसकी मदद और साथ दे और वह यह जानता हो कि वह ज़ालिम है तो यकीनन वह दीन इस्लाम से खारिज हो जाता है।

बुखारी व मुस्लिम में है कि हज़रत अबू मूसा (रज़ि०) से उल्लिखित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए ऐसा है जैसे किसी इमारत का एक हिस्सा दूसरे हिस्से को थामे रहता है। फिर आपने अपनी अंगुलियों को एक दूसरे से मिलाया!

कुरआन मजीद की सूरः माइदा की आयत नम्बर ७८–७९ में फरमान है– जो लोग बनी इसराइल में इन्कारी हुए उन पर दाऊद और ईसा बिन मरयम की जबान से लानत (धिक्कार) की गयीं, यह इसलिए कि ना फरमानी करते थे और हद से आगे बढ़ जाते थे और बुरे कामों से जो वो करते थे, एक दूसरे को रोकते न थे, बेशक वो बुरा करते थे।

मुसनद अहमद में फरमाने रसूल स.अ.व. है कि बनू इसराईल में पहले पहले जब गुनाह के काम करना शुरूअ़ हुए तो इनके उलमा ने इन्हे रोका लेकिन जब देखा कि वे बुराईयों से नहीं रुक रहे हैं तो कड़ा रुख़ अपनाकर अलग नहीं हुए बल्कि उनके साथ खाते–पीते रहे। अल्लाह तआला ने एक दूसरे के दिल भिड़ा दिये ~~और हज़रत~~ दाऊद अलैहिस्सलाम व हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ज़बान से इन पर लानत फरमाई क्योंकि वो नाफरमान और ज़ालिम बन गये थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसके बयान करते समय तकिया लगाए हुए थे लेकिन अब ठीक होकर बैठ गये और फरमाया नहीं–नहीं, अल्लाह तआला की कसम तुम पर ज़रूरी है कि लोगों को शरीअत के खिलाफ बातों के करने से रोको और शरीअत की पाबन्दी पर लाओ।

अबू दाऊद की हदीस में है कि सबसे पहली बुराई बनी इसराईल में यही दाखिल हुई थी कि एक शख़्स दूसरे को शरीअत के खिलाफ काम करते हुए देखता तो उसे रोकता, उससे कहता कि अल्लाह तआला से डर और इस बुरे काम को छोड़ दे यह हराम है लेकिन दूसरे रोज़ जब वह इस बुराई को न छोड़ता तो उससे किनाराकशी (अलग) न करता बल्कि उसका हमनिवाला हम पियाला रहता और मेल जोल बनाये रखता इसलिए सब में बुराई आ गयी। फिर आप स.अ.व. ने इस पूरी आयत को पढ़कर फरमाया– वल्लाह! तुम पर अनिवार्य है कि भली बातों का हर एक को हुक्म करो, बुराईयों से रोको, जालिम को उसके जुल्म से रोको, और उसे तंग करो कि हक़ (अच्छाई) पर आ जाए। तिरमिज़ी और इब्ने माजा में भी यह हदीस है। अबू दाऊद वगैरह की हदीस के आखिर में यह भी है कि अगर तुम ऐसा न करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे दिल भी आपस में एक दूसरे के साथ मार देगा और तुम पर भी अपनी फिटकार (धिक्कार) नाज़िल फरमाएगा।

मुसनद और तिरमिजी में है कि या तो तुम भलाई का हुक्म और बुराई से मना करते रहोगे या अल्लाह तआला तुम पर अपनी तरफ से कोई अज़ाब भेज देगा फिर तुम उससे कोई दुआ

करोगे लेकिन वह कुबूल नहीं फरमाएगा।

इब्ने माजा में है कि अच्छाई का हुक्म और बुराई से मना करो इससे पहले कि तुम्हारी दुआएं कुबूल होने से रुक जाएं। सही हदीस में है कि तुममें से जो शख़्स शरीअ़त के खिलाफ काम देखे तो उस पर फ़र्ज़ है कि इसे अपने हाथ से रोके। अगर इसकी ताकत न हो तो ज़बान से मना करे और इसकी भी ताकत न रखता हो तो अपने दिल में ही बुरा माने और यह ईमान की सबसे कमजोर दशा है। (मुस्लिम)

मुसनद अहमद में है कि अल्लाह तआला खास लोगों के गुनाहों से आम लोगों को अज़ाब नहीं करता लेकिन उस समय कि बुराईयाँ फैल जाए उनमें और वो उनके रोकने की ताकत रखने के बावजूद भी रोक टोक न करें तो उस वक्त आम–खास सबको अल्लाह तआला अजाब में घेर लेता है।

इब्ने माजा में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने खुत्बे में फरमाया कि खबरदार किसी शख़्स को लोगों की हैबत हक बात कहने में रोक न दे। इस हदीस को बयान फरमा कर हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) रो पड़े और फरमाने लगे– अफसोस हमने ऐसे मौकों पर लोगों का डर मान लिया।

अबू दाऊद, तिरमिजी और इब्ने माजा में है कि अफज़ल (उत्तम) जिहाद (संघर्ष) हक बात ज़ालिम बादशाह के सामने कह देना है।

इब्ने माजा में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुममें से किसी शख़्स को अपनी बेइज़्ज़ती न करनी चाहिए। लोगों ने पूछा– हुज़ूर स.अ.व. यह कैसे! फरमाया शरीअत के खिलाफ कोई काम देखे और कुछ न कहे तो कियामत के दिन इससे पूछताछ होगी कि फुंला मौके पर तू क्यों खामोश रहा। यह जवाब देगा कि लोगों के डर की वजह से। अल्लाह तआला फरमाएगा– मैं सबसे ज़ियादा हक़दार था कि तुम मुझसे खौफ खाते।

अल्लाह तआला का फरमान और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों से यह साबित होता है कि भलाई का हुक्म देना और बुराई व शरीअत के खिलाफ कामों को रोकना हर मुसलमान पर फर्ज़ है।

"दीन"

नमाज़ और रोज़े तक ही सीमित नहीं है

डा० अब्दुल लतीफ मारूफपुरी

बाज मर्तबा लोगों के जेहन में यह ख्याल आता है कि इस्लाम का तकाज़ा यह है कि मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ ली और पाँच वक़्त हाजिरी दे दी रोज़ा रख लिया और ज़कात अदा कर दी। यानी इबादात अदा कर लीं बस इस्लाम का हक अदा हो गया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ में एक इशारा इस तरफ भी है कि यह मस्जिद की तामीर करना मस्जिद के अन्दर जाकर अल्लाह तआला की इबादत करना नमाज़ें पढ़ना ज़िक्र करना यह सब भी दीन का हिस्सा है। लेकिन ऐसा नहीं कि इसी को सब कुछ समझकर बाकी चीज़ों को नज़र अन्दाज़ कर दो। आज हमारा यह हाल है कि जब तक मस्जिद में हैं तो मुसलमान हैं। नमाज़ें भी हो रही हैं। ज़िक्र भी हो रहा है। इबादत भी अन्जाम दी जा रही है। लेकिन जब बाजार में पहुंचे तो वहाँ सारे मामलात अल्लाह के हुक्म के खिलाफ हो रहे हैं। दफ्तरों में पहुंचे तो वहाँ मुसलमान नहीं। बस दीन समझ लिया इबादतों के अन्जाम देने को, नमाज़ पढ ली और रोज़ा रख लिया, जकात दे दी, हज कर लिया। अल्ला अल्ला खैर सल्ला याद रखो दीन दर हकीकत पाँच चीज़ों का मजमुआ है। अक़ायद की दुरुस्ती, इबादत, मुआमलात, मुआशरत, अखलाक इन सबके मज़मूए से इस्लाम बनता है। इस्लाम यह नहीं कि मस्जिद में तो मुसलमान हैं। घर में इस्लाम को भूल जाये (मआज़ अल्लाह) मुसलमान वह है जो पूरा का पूरा मुसलमान हो। कुरआन करीम में आया है– "ऐ ईमान वालों इस्लाम में पूरे के पूरे दाखिल हो जाओ"

मस्जिद के हकूक में यह बात भी दाखिल है कि जिसको मस्जिद में जाकर सज्दा कर रहे हो। बाज़ार में भी जाकर उसी के हुक्म की पैरवी करो। यह नहीं कि मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और बाजार में जाकर झूठ बोले। यह नहीं कि नमाज़ पढ़ने के बाद सूद खा लिया। बल्कि अखलाक और मुआशरत को भी शरीअत के मुताबिक बना लो। हमारे हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली साहब थानवी रह० के मलफुजात इस बात से भरे हुये हैं कि जिस तरह इबादत जरूरी है उसी तरह मुआशरत दुरुस्त करना भी ज़रूरी है। अख़लाक़ दुरुस्त करना ज़रूरी और मुआमलात भी दुरुस्त करना ज़रूरी है। आज की दुनिया इस बात को फरामोश कर बैठी है। और दीन सिर्फ नमाज़ रोज़े को समझ लिया है। अल्लाह तआला हमारे भाइयों को सहीह दीन की समझ अता फरमाये।

मानवता का सन्देश

मानव जाति की सेवा में

अबू मर्गूब

ईश्वर को धन्यवाद है कि हम मानव हैं, इस धरती पर अनगिनत सृष्टियाँ हैं। उनमें मानव अथवा मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। इसलिये कि इसको उन्नति प्रदान करने वाली, उन्नतिशील बुद्धि मिली है, बुद्धि तो सभी जीवन धारियों को मिली है, परन्तु उनकी बुद्धि केवल उनकी आवश्यकताओं के पूरा करने में सहायक हैं। चारा मिला खा लेंगे, पानी मिला पी लेंगे, नहीं मिला और बंधे नहीं हैं, खुले हैं तो चल फिरकर ढूंढेगे जहाँ मिलेगा खा पी लेंगे। उनकी बुद्धि इस प्रकार की नहीं है कि लहलहाते गेहूँ के खेत और उसी के निकट हरी भरी घास में अंतर कर सकें जो सामने आया उसमें मुंह मार देंगे, गड्ढे में गन्दा पानी भरा है, नान्द में साफ पानी भरा है इसमें वह अंतर नहीं कर सकते, जो आगे आया उसमें से पी लेंगे। मारोगे तो इतनी बुद्धि है कि मार से भागेंगे लेकिन यह समझ कदापि नहीं है कि क्यों मारे गये, ऐसा काम न करें कि न मारे जाएं। चोट पर दुख पर उनको रोना नहीं सिखाया गया, खुशी पर उनको हंसना नहीं सिखाया गया, वह बीमार हों, कोई रोग लग जाए आप उनको पशु चिकित्सा वाले अस्पताल ले जाएं दवा खिलाएं अच्छे हो जाएं, फिर बीमार पड़ें, आप उनको खोल दें, उनके कान में कह दें, अस्पताल चले जाओ, वह न जाएंगे, इसलिये कि इतनी समझ वाली बुद्धि नहीं रखते। सत्य यह है कि वह चलते फिरते बनस्पत हैं, परन्तु मानवजाति को ऐसी बुद्धि मिली है कि उसकी बुद्धि की समीक्षा सरल नहीं। इसकी बड़ी विशेषता तो यह है कि इसकी बुद्धि उननति देने वाली है। निःसन्देह च्यूँटी जिस प्रकार अपना घर बनाती मनुष्य के बस की बात नहीं, परन्तु वह सहस्त्रों वर्ष पहले जेसे अपना घर बनाती थी, आज भी उसी प्रकार बनाती है, तनिक भी अन्तर न कर सकी, यह सत्य है, उनको जो स्थिर बुद्धि दी गई है, वह आश्चर्य जनक है। बया का घोंसला, मधुमक्खी का छत्ता, उसमें मधु का एकत्र करना, मच्छरों और खट्मलों के खून चूसने की विधि, दीमकों का लकड़ी खाकर मिट्टी में बदल देना, केचुओं का मिट्टी खाकर नीचे से ऊपर कर देना, पखेरुओं का हवा में उड़ना, मछलियों का पानी में तैरना, उसी में रहना, और पानी से आक्सीजन लेना आदि, यह वह आश्चर्यजनक कार्य हैं जो वह अपनी स्थिर बुद्धि से भली भांति करते हैं, परन्तु उनके इन कार्यों में लेश मात्र उन्नति न हुई, न हो सकेगी, इसलिये कि उनकी बुद्धि स्थिर है।

इसके संमुख मानव बुद्धि, मनुष्य को एक दशा में ठहरने ही नहीं देती, कभी यही मानव पहाड़ की खोहों में रहता था, जंगल के फल फलारी खाता था, पत्थर फेंककर जंगली पशुओं को मार गिराता, फिर उनको पत्थर, लकड़ी, हड्डी के यंत्रों से चीड़ फाड़कर कच्चा खा जाता। कहीं जाना होता तो पैदल चलकर जाता, कोई सीमा है उसकी उन्नति की एक-एक करके गिनाऊ तो प्रातः से संध्या हो जाए, सकारे से सांझ हो जाए और बात अधूरी रह जाए, आज मनुष्य, मोटर साईकिल पर चलता है, कार पर चलता है, रेल गाड़ी पर सोते हुए भागता है, आकाश में विमान द्वारा उड़ता है। रस्ता चलते अमरीका, लन्दन, अरब, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका से बातें करता है, कच्चा मांस नहीं, बिर्यानी, पुलाव, बाक़र ख़ानी, शीरमाल, पराठा, कबाब, हल्वा, पूड़ी, कितनी स्वादिष्ट मिठाइयाँ, कितने स्वादिष्ट नमकीन, बनाता और खाता है।

अब वह नंगा नहीं रहता, न अपनी प्राकृतिक लज्जा से पत्तों और खाल से लज्जा अंग छुपाता है। कोई सीमा है उसके प्रगति की, कोई गिन्ती है उसके वस्त्रों के प्रकारों की। हम बूढ़े तो उनके नाम भी नहीं ले पाते, गिन्ना तो दूर का बात है। अब वह खोहों में नहीं रहता, खोहों से निकलकर उसने न जाने कितने प्रकार के घर बनाए, और आप तनिक उन भवनों पर एक दृष्टि तो डालें, कितने प्रकार के भवन, कितनी बनावटों के फलैट, एयर कन्डीशन, विद्युत से जगमग, अब कुंए, नदी, तालाब से पानी नहीं लाना है, टोंटी खोलें पानी पाएं, जाड़ों में गर्म पानी लें, गर्मियों में ठन्डा पानी लें, यह सब मानव की उन्नतिशील बुद्धि का चमत्कार है।

हमारे बाघ और चीते, जिनकीबुद्धि सीमित तथा स्थिर है, वह तो केवल अपने मतलब के लिये आप्रेशन करना जानते हैं, चीड़ा, फाड़ा, खाया चल दिये, उनकी यह चीड़ फाड़, मानव

की चीड़ फाड़ से पहले की है, कारण यह कि उनका जीवन ही इसी चीड़ फाड़ पर निर्भर है, परन्तु आज तक वह दूसरों के लाभ के लिये कोई आप्रेशन न कर सके, आखिर मनुष्य भी तो आरंभ में इसी प्रकार चीड़ फाड़ करता था, परन्तु उसकी उन्नतिशील बुद्धि ने आज उसको कहाँ पहुंचा दिया, आँख, नाक, कान मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, पित की थैली, गुर्दे, शरीर का कौनसा अंग है, जिसका सफल आप्रेशन नहीं होता, कितने खराब अंग निकालकर दूसरे से लेकर लगा दिये जाते हैं, दांत और कई स्थानों की हड्डियाँ बनाकर लगा दी जाती हैं।

यही मनुष्य जो पहले खोहों में रहता था वह अब भव्य भवनों में मिल जुलकर रहने लगा गांव बसे, टाऊन बने, नगर बसे, पहले जिन लोगों ने कुछ गांवों तथा नगरों का प्रतिबन्ध किया वह राजा कहलाए, उन्नति होती रही रहन, सहन के विधान बने, व्यक्तित्व राज्य समाप्त हुए, जनतंत्र आया जहाँ के लोगों ने वैधानिक नियमों को अपनाया, वहाँ शान्ति रही, जहाँ वैधानिक नियमों का उल्लंघन हुआ, वहाँ जीवन में कठिनाइयाँ आई, अत्याचार ने जन्म लिया, रक्तपात के खेल खेले जाने लगे। निःसन्देह विधान में इन समस्याओं के समाधान का प्रावधान है, कारागार है, आर्थिक दण्ड हैं परन्तु जब पापों का प्रचलन हो गया तो दण्ड से बचने के लिये छुपकर पाप होने लगे, ऐसे में विधान फेल होता दिखा। क्या आप ने कभी सोचा कि फिर इस जटिल समस्या का समाधान कैसे हो?

इस समस्या का समाधान जभी सम्भव है जब मन में यह बात बैठी हो कि कोई दृष्टि ऐसी भी है जो हमारी हर दशा को देखती है, हम सात कोठरियों के भीतर, रात की अंधेरियों में, कोई भी कार्य करें, भला या बुरा, उस दृष्टि से छुप नहीं सकते, वह दृष्टि है सृष्टि के सृष्टा की जिसे कोई अल्लाह कहता है, कोई ईश्वर कहता है, कोई खुदा कहता है, कोई गाड कहता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि उस ईश्वर को समझने, उससे परिचित होने और उसको पा लेने का साधन क्या है?

सत्य यह है कि, हमारी उन्नतिशील बुद्धि, इतना मानने पर तो विवश है कि, इस संसार का कोई विधाता अवश्य है। जब एक पेन्सिल, एक पेन, एक कप, एक घड़ी बिना बनाए नहीं बन सकती, तो यह सूर्य जो सारे जगत को प्रकाश तथा ताप देता है और उसके उदय तथा अस्त के नियम में कभी भी अंतर नहीं होता, स्वतः कैसे बन सकता है, यह धरती, यह आकाश, यह गगन मंडल, यह सहस्त्रों प्रकार की सृष्टि आप ही आप कैसे अस्तित्व में आ सकती है? कोइ अपार शक्ति अवश्य इन सबको रचने वाली है।

आप ध्यान दीजिये साइंस में हम इतने आगे जा चुके हैं कि खून, थूक, खखार, मल, मूत्र का एक एक अंश हमारा पैथालोजिस्ट स्पष्ट करके बताता है, अल्ट्रासाउन्ड, एक्स्रे आदि क्या क्या बता देते हैं परन्तु नहीं बता पाते तो प्राणों के विषय में कुछ भी नहीं बता पाते, कि यह कहाँ से आते हैं कहाँ चले आते हैं, कोई मशीन आज तक यह भेद न खोल सकी।

यदि ईश्वर पथप्रदर्शन न करता तो यह बुद्धि सर पटक के मर जाती और कुछ भी समझ न पाती।

कैसे फिर होता अहो, मानव का उद्धार।

यदि सन्देश न भेजता, अपना जगदाधार।।

तनिक सोचिये अन्डे से मुर्गी निकलती है और मुर्गी से अन्डा इनमें पहले कौन पैदा हुआ और कैसे? इसी प्रकार सोच डालिये, पुरुष पहले पैदा हुआ था या स्त्री और कैसे? पेड़ पहले पैदा हुआ या उसका बीज और कैसे? सतय यह है कि किसी के पास भी उचित उत्तर नहीं है। इस का उत्तर है तो उसी के पास जिसको उसके पैदा करने वाले ने स्वयं सुझाया।

यह जो आप हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, देख रहे हैं यह किसी की बुद्धि से नहीं बने हैं। यद्यपि मुझे इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म का भरपूर ज्ञान नहीं है परन्तु कई धर्मों के मौलिक तत्वों का अध्ययन किया है और उसके आधार पर कह सकता हूँ कि हर धर्म वाले का यही कहना है कि हमारा धर्म ईश धर्म और हमारा धार्मिक ग्रन्थ ईशवाणी है। और इस कथन को झुटलाने के लिये हमारे पास कोई उचित तर्क भी नहीं है। बस एक बात खटकती है कि जब सब एक मालिक, एक विधाता, एक निर्माता मानते हैं तो यदि सभी धर्म उसी के हैं तो इन सबमें मतभेद क्यों है। इतना मतभेद कि एक दूसरे का विलोम, यहां यह बात तो स्पष्ट है कि इसका कारण मानवी हस्तक्षेप है परन्तु इस झगड़े में पड़ना हमारे मिशन के विरोध में है। ऐसी स्थिति में जब हमको एक साथ रहना है और हमारे धर्मों में प्रतिकूलता है तो हमारा कर्तव्य क्या बनता है? यदि आप ध्यान दें तो जिन

धार्मिक विश्वासों अथवा कर्मों में प्रतिकूलता है, विभिन्नता है, उनको हम जिसके धर्म में जो है उसको उस धर्म वाले के लिये छोड़ दें, उसको कभी वाद विवाद में न लाएं, हम केवल उन बातों की ओर लोगों को बुलाएं जो सभी धर्मों में पाई जाती हैं और जो सामाजिक जीवन के शान्ति के लिये अनिवार्य भी है और पर्याप्त भी, उनमें सर्वप्रथम है ईश्वर को उसकी शक्तियों अर्थात गुणों के साथ मानना, यह मानना कि न तो उससे कुछ छुप सकता है, न कोई पापी उसकी पकड़ से बच सकता है। यदि यह मुख्य बात मनुष्य के मन में विद्यमान रहे तो समाज के सुधरने में देर न लगे, फिर तो संसार से अत्याचार विदा हो जाए परन्तु यह बात हर मन में पैदा होना सरल नहीं है और यदि मनुष्य चाहे तो बहुत सरल भी है। हर मनुष्य को चाहिये कि वह किसी धर्म गुरू से यह बात सीखे। मानव जाति के लिये यह तत्व अति आवश्यक है और मानवता का यह वह सन्देश है जिसे कोई भी धर्म वाला नकार नहीं सकता।

रहीम कहते हैं :–

अमर बेल बिन मूल की प्रति पालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तज खोजत फिरये काहि।।

उस ईश्वर ने तो ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि बिना मूल अर्थात जड़ की अमर बेल को भी उस की जीविका पहुंचा कर उसे जीवित रखता है, उसे छोड़कर किसे ढूढ़ते फिरते हो। अरे वह तो कुसवारी के बन्द किरवा को भी जीवित रखता है और व्हेल मछलियों और हाथियों के पेट भी भरता है। उस शक्ति को मानकर उस पर पूरा भरोसा रखें। कबीर कहते हैं :–

जा को राखे साइयां मार न सकिहै कोए।
बाल न बांका कर सकै जो जग बैरी होए।।

तो पहली बात तो यह हुई कि ईश्वर पर विश्वास हो मन में उसका प्रेम हो, धर्म गुरुओं से इस सत्य ज्ञान को प्राप्त करें हर दशा में उसका ध्यान रहे।

दूसरी बात यह कि उसकी सृष्टि से प्रेम हो, मनुष्य के मन में दूसरे मनुष्य के लिये सहानुभूति हो, मनुष्य ही नहीं, अपितु हर जीवधारी के लिये सहानुभूति हो, यह शिक्षा भी हर धर्म में पाई जाती है अतः मानवता के सन्देश में इसको जोड़ना अनिवार्य है।

सहानुभूति चाहिये महाविभूति है यही।
वशी कृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।।
अहा वही उदार है परोपकार जो करे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे।।

यदि समाज में सहानुभूति का वातावरण उत्पन्न हो जाए तो समाज शान्तिमय हो जाए।

तीसरी बात जो हर धर्म में अभीष्ट है और जो मानवता का महत्वपूर्ण सन्देश है, वह कर्तव्य प्रायणता है, आज मानव जाति में इसकी बड़ी कमी दिखाई पड़ती है। समाज में यह अशान्ति इसी कर्तव्य प्रायणता के अभाव के कारण है। यदि हर अधिकारी, हर कर्मचारी अपने कर्तव्य का पालन करे, हर व्यापारी, हर किसान अपने कर्तव्य का पालन करे, हर गुरू, हर विद्यार्थी अपने कर्तव्य का पालन करे, वैद्य, डाक्टर, हकीम, इन्जीनियर, ठेकेदार, पुलिस, दरोगा के विषय में तनिक सोचिये तो कहाँ–कहाँ पानी भर रहा है और लोगों की कोताहियों से समाज कितना प्रभावित हो चुका है, यदि हर मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन करे तो समाज कितना शान्तिमय हो जाए।

यह तीन बातें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं ईशज्ञान और उसका ध्यान, सहानुभूति, और कर्तव्य प्रायणता इस के पश्चात बहुत सी ऐसी बातें हैं जो एक अच्छे समाज के लिये आवश्यक है और जो हर धर्म की शिक्षाओं में विद्यमान हैं जैसेः

सत्य अपनाना और असत्य को त्यागना, कबीर कहते हैं :–

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके मन में सांच है, ताके मन में आप

चोरी, डकैती, कत्ल, आतंक, व्यभिचार, जुआ, शराब, छल–कपट, धोखा, किसी की आबरू लेना आदि जितने भी काम जो दूसरों को धोखा देने वाले हैं, अपने भाइयों को कष्ट देने वाले हैं, सभी धर्मों में उन से रोका गया है। अतः मानवता का यह सन्देश है कि हम मानव जाति को जो भी सुख पहुंचा सकते हैं उसमें कोताही न करें और हम किसी मानव को, अपितु किसी जीवधारी को अकारण, दुख न पहुंचाएं परन्तु मानव सर्वश्रेष्ठ है। अतः जो जीव जंतु मानव को कष्ट देने वाले हैं जैसे मक्खी, मच्छर, खटमल, चूहे आदि, या जो मनुष्य के प्राण ही ले लेते हैं, या बहुत दुख देते हैं, जैसे बिच्छू, सर्प, तथा हिन्सक पशु आदि, इनसे बचाव करना, आवश्यकता पर इनको मारना, उचित होगा। इसी प्रकार मानव सर्वश्रेष्ठ है। जिस धर्म में मांस मछली आदि खाने की आज्ञा है, उसको हम मानवता के सन्देश में विवाद का विषय न बनाएंगे।

मानवता का सन्देश है मानव को सुख पहुंचाना और उसे दुख से बचाना और यह जब ही हो सकता है जब मानव के बनाने वाले ईश्वर में विश्वास हो, उसकी पकड़ का भय हो, उसके पुरस्कारों पर विश्वास हो और उससे प्रेम हो।

ऐसे होते थे पहले के टीचर्स

जब छड़ी ने क्लास को पढ़ाया

एम० हसन अन्सारी

कालेज के प्रिंसपल राउंड पर हैं। एक क्लास में लड़के टीचर का दिया हुआ काम पूरा कर रहे हैं। कोई शोरगुल नहीं। मेज़ पर एक छड़ी रखी है, पर क्लास में कोई टीचर नहीं! ऐसा क्यों? क्लास खाली क्यों है? राउंड पूरा करके प्रिंसपल अपने कमरे में आते हैं। कैजुअल अरेंजमेन्ट (आकस्मिक प्रबन्धक) रजिस्टर मंगाकर देखते हैं, देखा कि उस क्लास में मोलवी साहब़ का पीरियड लगा है। मोल्वी साहिब तलब किये जाते हैं।

प्रिंसपल : मोल्वी साहिब! आपका पीरियड फुलां क्लास में था पर आप वहाँ नहीं थे, क्यों?

मोल्वी साहब : साहब! दरअसल मेरा पीरियड खाली न था, कैजुअल अरेंजमेन्ट लगाने में चूक हो गयी थी, मैंने अरेंजमेन्ट लगाने वाले की चूक को उजागर करना मुनासिब नहीं समझा। घंटी बजी तो मैं पहले अरेंजमेन्ट के क्लास में गया, लड़कों को काम दिया, छड़ी मेज़ पर रखी और अपने रेगुलर क्लास में चला गया। मैं एक ही समय दो जगह कैसे रह सकता था? जो क्लास आपने चेक किया वहाँ मैं मौजूद नहीं था, यह बात सच है, पर वहाँ मेज़ पर मेरी छड़ी मौजूद थी जो क्लास को पढ़ा रही थी। यह घटना सन् १९५१ की गवर्नमेन्ट स्कूल, रायबरेली की है।

अनोखा टीचिंग मेथड

टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में जुलाई का महीना। पी०टी० टीचर हसन अमीर साहिब का पीरियड सुबह छः बजे जी० आई० सी० इलाहाबाद की फील्ड पर होता था। समय की पाबन्दी की ताकीद। जो देर से आये फटीग (मशक़्क़त) के तौर पर फील्ड का दो चक्कर लगाये। एक दिन ऐसा हुआ कि हसन अमीर साहब ख़ुद देर से आये। आते ही फटीग के तौर पर फील्ड का दो चक्कर लगाया तब क्लास लेना शुरू किया। क्लास टीचिंग का उनका यह अनमोल व अनोखा मेथड अनुकरणीय है। यह घटना १९६० की है।

दीनी तअ़लीम और रोज़ी

अब्दुस्समद क़ासिमी

इल्म (विद्या) खुदा को पहचानने, गुनाहों पर खुदा की पकड़ और उसके जाह व जलाल (वैभव तथा प्रताप) से ख़ौफ़ज़दा (भयभीत) होने, खुद को पहचानने और खुदा की मअ़रिफ़त (परिचय) का ज़रीआ़ (साधन) है। इन्सान इसके ज़रीअ़े (द्वारा) कुदरत के जर्री उसूलों (नियमों) से वाक़िफ़ होकर इस दारुल मिहन (श्रमिक संसार) में अपनी आख़िरत संवार सके। माज़ी करीब (आसन्न भूत) तक अर्थात कुछ पहले तक हमारे यहाँ इल्म का यही तसव्वुर (कल्पना) और तअ़लीम का यही मक़्सद (उद्देश्य) जाना और समझा जाता रहा है। रोज़ी की फ़िक्र उसे ज़माने में भी थी लेकिन कोई उसे के लिये तअ़लीम को मक़्सदे अव्वलीन (प्राथमिक उद्देश्य) नहीं बनाता था। मआशियात का इल्म (अर्थशास्त्र) जिसकी बुनयाद ही मआ़श और इक्तिसाद (आजीविका) पर है उसे भी रोटी रोज़ी का इल्म कहना अप्रिय था।

लेकिन अब हाल यह है कि सारे उलूम को रोज़ी से जोड़ने की तजवीज़ मग़रिब ज़दा दानिशवर ही नहीं मश्रिकी तहज़ीब व तमद्दुन के अ़लमबरदार और उलमाए किराम भी पेश करने लगे हैं। रोज़ी से जुड़ा तअ़लीमी निज़ाम मदरसों में शुरूअ़ करने को एक बड़ा हल्का दानिशवराना (बुद्धिमानी का) काम समझता है। अस्री उलूम (आधुनिक विषयों) के साथ साइन्सी उलूम (विज्ञान) पर ज़ोर देने और उसे हर हाल में मदरसों के निसाब (पाठ्यक्रम) में दाखिल करने की सिफ़ारिश खूब की जाती है और यह सब कुछ मदरसों के तैयार किये हुए आलिमों की हमदर्दी के नाम पर किया जाता है, वही उलमा जो अभी कुछ पहले शाही ताज को भी इल्म की दौलत के सामने कुछ नहीं समझते थे और वक्त के बादशाह जिनकी ठोकर में रहा करते थे और जो अपनी मुफ्लिसी (निर्धनता) के बावजूद भरे दरबार में शरीअ़त के खिलाफ़ कामों पर तंबीह (चेतावनी) का साहस रखते थे और जो हर हाल में मौला की रज़ा पर राज़ी रहते थे। इल्म जिनका ओढ़ना बिछौना था, और तुच्छ पूंजी अर्थात दुन्या के लिये अपनी सलाहीयत (योग्यता) ग़ैरत व हमीयत (स्वाभिमान) का सौदा नहीं करते थे।

मैं मानता हूँ की मुग़ल्या सलतनत के ज़वाल और अंग्रेज़ों के आ जाने के बअ़द से लेकर अब तक उलमा के मिज़ाज में भी तब्दीली आई है और वह भी पहले जैसे नहीं रहे लेकिन यह तब्दीली इतनी भी नहीं हुई कि वह माद्दीयात के सैलाब में बह जाएं और दानिशवर (बुद्धिजीवी) उन्ही को रोज़ी रोटी के बारे में सोचने लगें और मस्जिद व मिम्बर व मिहराब और मदरसों की चटाई से उठाकर उनको बाज़ार में नीलाम कर दें। अल्फ़ाज़ की तल्ख़ी और जुम्लों की कड़वाहट की मआ़ज़िरत के साथ यह कहना चाहता हूँ कि इन ख़्यालात व तसव्वुरात और रोज़ी की तंगी के खौफ़ ने इस्लामी मदरसों में जगह बनानी शुरूअ़ कर दी है और कई इदारों (संस्थानों) में इसकी वजह से असली मक़्सद खत्म होता नज़र आता है। अगर इस पर बन्द नहीं बान्धा गया और इस्लामी मदरसों को खालिस इस्लामी तअ़लीम के लिये बचाकर न रखा गया तो हमारी इल्मी मजलिसें सूनी हो जाएंगी। मस्जिद के मेहराब व मिम्बर से हक की आवाज़ लगाने वाले नहीं मिलेंगे और नई नस्ल दीनी उलूम पढ़ने पढ़ाने को ऐसा भुला देगी कि कभी उसकी तरफ ध्यान भी न जाएगा। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को इसकी बड़ी फ़िक्र थी और उनका जिहन इस सूरतेहाल से बहुत परेशान था। उन्होंने १३ दिसम्बर १९२० ई० को कलकत्ते के एक मदरसे के इफ्तिताह (उद्घाटन) के मौकेअ़ पर कहा था :–

हिन्दुस्तान में सरकारी तअ़लीम ने जो नुक्सान हमारे कौमी खासाइल व अअ़माल को पहुंचाए हैं उनमें सब से बड़ा नुक़्सान यह है कि इल्म हासिल करने का अअ़ला मक्सद (उच्चतम उद्देश्य) हमारी नज़रों से ओझल हो गया। इल्म खुदा की एक पाक अमानत है और उसे सिर्फ इसलिये ढूंढना चाहिये कि वह इल्म है। लेकिन यूनीवर्सिटियों ने हमको एक दूसरी राह बताई वह इल्म का इसलिये शौक़ दिलाती है कि बिला उसके नौकरी नहीं मिल सकती पस अब हिन्दुस्तान में इल्म को इल्म के लिये नहीं बल्कि रोज़ी के लिये हासिल किया जाता है। यह बड़ी बड़ी

इमारतें जो अंग्रेजी तअलीम की नव आबादियां हैं किस मख़लूक से भरी हुई हैं, इल्म के चाहने वालों से नहीं एक मुट्ठी गेहूँ और एक प्याला चावल से प्रेम करने वालों से जिनको यक़ीन दिलाया गया है कि बिना तअ़लीम के वह अपनी रोज़ी नहीं कमा सकते (खुतबाते आज़ाद)।

इस्लामी मदरसों में अस्री उलूम (आधुनिक विषय) पढ़ाए जाने पर ज़ोर के पीछे यही बात मक्सूद है जिसका नतीजा यह होगा कि कुर्आन व हदीस और दूसरे दीनी उलूम से रग़बत कम हो जाएगी और मदरसे अपने मक्सद (उद्देश्य) से दूर जा पड़ेंगे। जिन इदारों ने इस तजवीज़ को क़बूल कर लिया है उनकी सूरते हाल देख आइये वहाँ कारे तिफ़्ला तमाम होता नज़र आ रहा है। अर्थात दीनी तअ़लीम को बच्चों के खेल की तरह बे मक़्सद बना दिया जा रहा है।

इस मसअले को इस तरह भी देखने की ज़रूरत है कि अगर मदारिसे इस्लामिया में रोज़ी रोटी वाला इल्म पढ़ाया जाए तो इक्तिसादी (आर्थिक) एअ़तिबार से मुस्लिम मुआशरे में क्या इन्क़िलाब आ जाएगा? इस सुवाल का जवाब यह है कि इस्लामी मदरसों में एक फीसद से भी कम बच्चे पढ़ते हैं ९९ फीसद वही तलबा है जो सरकारी स्कूलों और कालिजों में पढ़ते हैं जो अस्री उलूम पढ़ कर मुसलमानों की मआ़शी (आर्थिक) पसमान्दगी (पिछड़ापन) को दूर नहीं कर सके तो यह एक फीसद मौलवी क्या तब्दीली ला सकेंगे, इसलिये इन एक फीसद को दीनी कामों के लिये खास रखना चाहिये जिसे सरकारी इदारों संस्थाओं के पढ़े लोग नहीं कर सकते।

एक बात बार–बार यह भी कही जाती है कि आलिम लोग अपनी रोज़ी के मुआमले में समाज पर बोझ होते हैं। यह बात किसी तरह सहीह नहीं है क्योंकि अक्सर उलमा मआशी एअ़तिबार **से खुद कफील हैं उनके मुक़ाबले में बेरोज़गार ग्रेजवेट और पोस्ट ग्रेजवेट इतने मिलेंगे कि उनकी गिन्ती करना मुश्किल है। तअ़लीम के नाम पर आज** जो तिजारती मन्डी गली गली और शहर–शहर में काइम हो गई है वह इसी बेरोज़गारी की देन है जिससे मालदारों के बच्चे फाइदा उठा रहे हैं। और अगर मान भी लिया जाए तो इल्म व फन के हर शुअ़बे का मआ़श उस फन से वाबस्ता (सम्बन्धित) होता है, स्पष्ट है कि डाक्टर और इन्जीनियर की फीस देकर कोई उस पर इहसान नहीं करता और न ही बोझ समझता है तो उलमा के बारे में क्यों ऐसा समझ लिया गया कि वह जिन दीनी कामों में लगे हुए हैं उसकी उजरत समाज को चुकानी होती है।

वाकिआ यह है कि वह समाज की खिदमत करते हैं, गरीब और यतीम (अनाथ) बच्चों को तअ़लीम (शिक्षा) देते हैं। मस्जिद के मिम्बर व मिहराब से हक की आवाज़ लगाते हैं, इमामत के फ़राइज़ अंजाम देते हैं, मदरसों में दीनी उलूम पढ़ाते हैं, समाज को एक अच्छा समाज बनाने के लिये उनकी ज़रूरत है और इस खिदमत के बदले में समाज का फर्ज़ बनता है कि वह इन उलमा की कफ़ालत (भरण पोषण) करें और उनके इन अअ़ला कामों की अच्छी उजरत दें। जब आप डाक्टर को मशवरे की अच्छी उजरत देते हैं, इंजीनियर पूरी इमारत की लागत का कुछ हिस्सा ले लेता है तो समाज के इस ज़रूरी काम करने वालों से सौतेलापन क्यों? यह एक सुवाल है जिसका जवाब हम सबको देना है और जिस दिन हमने इस सुवाल का असली जवाब पा लिया **मज़हबी उलूम के हामिलीन अर्थात उलमा के लिये दूसरों की नज़र में रोज़ी की फ़िक्र का कोई मसअला बाक़ी न रहेगा।**

(पृष्ठ २६ का शेष)

कराएं।

सांप काटना (Snake Bite)

जैसे ही सांप काटे का कोई मरीज़ दिखे :–

○ सांप काटे की जगह से दो तीन इंच ऊपर कसकर पट्टी बांध देनी चाहिये।

○ काटे की जगह चाकू या ब्लेड से इस तरह (+) की चीरा लगा देना चाहिये।

○ मरीज़ को तुरन्त अस्पताल भेज दें ताकि सांप के ज़हर (विष) का तिर्याक़ (विष निवारक अवषधि) का इस्तिअ़माल हो सके।

अस्पताल न ले जा सकें तो पहले ज़हर खींचने का इन्तिजाम करें मुर्गी के बच्चे मिल सकें तो उनके पाखाने के मकाम के पर नोचकर ज़ख्म से पाखाने के मकाम से चिपका दें, बच्चा जहर खींच लेगा और मर जाएगा इसी तरह जब तक बच्चे मरते रहें यह अमल करते रहें उम्मीद है कि मरीज़ अच्छा हो जाएगा।

जख्म पर प्लास्टिक की झिल्ली या हल्का रबर रखकर मुंह से भी जहर खींचा जा सकता है, सीधे मुंह से भी ज़ख्म पर मुंह लगाकर जहर खीचें थूकें और जल्दी जल्दी कुल्ली करें। यह सब इलाज रिस्की हैं अस्ल इलाज जहर का तिर्याक़ ही है जो अस्पताल ही में मिल सकता है।

माँ–बाप का हक़

सुरैया खानम मारूफपुरी

कुरआने करीम के अन्दर अल्लाह तआला ने कई जगह अपनी इबादत और अपने हक के साथ माँ–बाप के हक का भी ज़िक्र फरमाया और जहाँ अल्लाह तआला ने अपनी इबादत की ताकीद फरमायी है वहाँ माँ–बाप के साथ हुस्ने सुलूक और इताअत की भी ताकीद फरमाई है–

१. सूर–ए–बकरा आयत न.८३

२. सूर–ए निसा आयत न. २६

३. सूर–ए–अनआम आयत न.१५१

४. सूर–ए–बनी इसराईल आयत न.२३

यह वह आयतें हैं जिनमें अल्लाह तआला ने अपने हक के साथ माँ–बाप के हक की ताकीद फरमायी है इनके अलावा और भी बहुत से मकाम पर माँ–बाप के हक की ताकीद फरमायी है। कहीं फरमाया है।

"हमने इन्सान को अपने माँ–बाप के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद फरमायी है। हमने इन्सान को अपने माँ–बाप के साथ हमदर्दी की ताकीद की है।" माँ बाप का हक औलाद के ऊपर अल्लाह के बाद दूसरे नम्बर पर है। इसलिये कि अल्लाह तआला हकीकी खालिक है और असबाब में माँ–बाप अपने औलाद के वजूद का सबब जाहिरी है और हक तआला की शाने रबूबिअत का मज़हर हैं अल्ला तआला ने जगह–जगह माँ–बाप के हक की अहमियत के लिये ताकीद फरमायी है कि हमेशा अपने माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करते रहें। इनकी तअजीम व मुहब्बत और खिदमत गुज़ारी को अपनी सआदत समझें और सुरह लुकमान आयत १५ और सुरह अनकबूत आयत ८ में इस बात का हुक्म है कि अगर माँ–बाप मुशरिक हों और तुमको शिर्क का हुक्म करें तब भी दुनिया में उनके साथ अच्छा मामला करना चाहिये। अलबत्ता शिर्क या किसी भी गुनाह में उनकी इताअत न की जाएगी।

हदीस में आया है कि माँ का हक बाप के मुकाबले में तीन गुना ज्यादा है इसलिये कि माँ तीन किसम की ऐसी तकलीफें उठाती हैं जिनमें बाप शरीक नहीं।

(१) हमल के ज़माने में नौ महीने तक माँ ने हमल का बोझ उठाया है। आखिरी अय्याम में तो किसी करवट पर आराम नहीं कर सकती थी। कभी इस करवट कभी उस करवट पर कभी चित लेटी गरज कि बेआरामी और मशक्कत में पूरा ज़माना गुजर जाता है। मगर इस तकलीफ में बाप का कोई हिस्सा नहीं है इसी को अल्लाह तबारक तआला ने कुरआन में इरशाद फरमाया है।

(२) दूसरी तकलीफ माँ ने विलादत के वक्त में उठाई कि विलादत के वक्त में हयात मौत के साथ जो तकलीफ़ माँ ने झेली है इस तकलीफ में भी बाप का कोई हिस्सा नहीं है।

(३) विलादत के बाद पूरे जिस्म का जोहर दूध की शक्ल में माँ ने पिलाया है इसमें भी बाप का कोई हिस्सा नहीं होता।

विलादत के बाद महीनों तक बच्चा रात में नहीं सोता। मिनट–मिनट में रोना शुरू कर देता है। जिसके नतीजे में माँ को पूरी रात में एक घण्टा भी सोने को नहीं मिलता। सब तकलीफ माँ ने तनहा उठाई है। इसलिये हदीस शरीफ में माँ के हक को बाप के मुकाबले में तीन गुना ज्यादा बताया गया है जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ़ में आया है।

मुहम्मद अ़ली जौहर और अंग्रेज

मुहम्मद अ़ली जौहर एक बार अरबी वज़अ़ इख्तियार कर के असेम्बली तशरीफ लाए, सदरे जमअ़ीयते मुकन्निना से मुलाकात हुई वह अपने कमरे ले गये और एक बड़े अंग्रेज से मुहम्मद अली का तआरूफ कराया, अंग्रेज ने मुहम्मद अली को अरबी लिबास में देखकर कहा : "मौलाना आप तो बिल्कुल अरब मअलूम होते हैं।" मुहम्मद अली ने जवाब दिया : "शक्रिया ! लेकिन जब बराह बरस तक मैं बिल्कुल अंग्रेजी लिबास पहनता रहा तो आप में से किसी ने नहीं कहा कि पूरे अंग्रेज लगते हो बल्कि काला आदमी ही कहा, और अब जब मैंने अपने पैगम्बर (अ०) के वतन वालों का लिबास अपनाया तो आप को "बिल्कुल अरब मअ़लूम होता हूँ।"

रामायण और महाभारत

इतिहास के पन्नों से

हमारे मुल्क की अक्सरीयत हिन्दू भाइयों की है। हम जब तब उनसे अखन्ड रामायन की आवाज़ सुनते हैं लेकिन तारीखी हैसीयत से नहीं जानते कि रामायन क्या है। इसी तरह महाभारत के किस्से ज़बानी सुनते हैं। आज हम आप की जानकारी के लिए आपके सामने दोनों के तारीख़ी किस्से पेश कर रहे हैं। (इदारा)

रामायण की कथा— रामायण दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् राम तथा अयण। राम एक महापुरुष थे और अयण का अर्थ है घर। रामायण उस ग्रन्थ का नाम है जिनमें महापुरुष श्री रामचन्द्र जी की जीवन कथा का वर्णन है। रामचंद्र जी अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे जो इक्ष्वाकु–वंशीय क्षत्रिय थे और अयोध्या में शासन करते थे। राजा दशरथ के तीन रानियाँ कोशिल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी थीं। कौशिल्या के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न और कैकेयी के भरत नामक पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें राम सबसे बड़े थे। जब राजा दशरथ वृद्ध हो गये तब उन्होने राम को अपना उत्तराधिकारी बनाने तथा उनका राज्याभिषेक करने का निश्चय किया। अपनी चेरी मंथरा के कहने से रानी कैकेयी ने इस शुभ कार्य में विघ्न पैदा कर दिया। एक बार राजा दशरथ ने रानी कैकेयी को दो वर देने का वचन दिया था। रानी कैकेयी ने एक वर से राम को चौदह वर्ष का वनवास और दूसरे से अपने पुत्र भरत को राज्य का उत्तराधिकारी बनाने की मांग की। राजा दशरथ को वचनबद्ध होने के कारण ये दोनों ही वर स्वीकार करने पड़े। रामचन्द्र ने अपने पिता की आज्ञा स्वीकार कर ली और अपने छोटे भाई लक्ष्मण तथा अपनी पत्नी सीता के साथ जंगल को चले गये। महाराज दशरथ की पुत्र–शोक में मृत्यु हो गई। रानी कैकेयी की भी इच्छा की पूर्ति न हुई क्योंकि भरत ने राज्य लेना स्वीकार नहीं किया, परन्तु मंत्रियों के बहुत समझने–बुझाने पर रामचन्द्र जी के वनवास काल तक उनकी खड़ाऊ की सिंहासन पर रख कर राज–काज को संभालने के लिए तैयार हो गए। जंगल में सीता जी को लंका का राजा रावण चुरा ले गया जो राक्षस था। उसने सीता जी को लंका की अशोक–वाटिका में रखा। राम तथा लक्ष्मण इस दुर्घटना से बड़े दुखी हुए और सीता जी की खोज में इधर–उधर भटकने लगे। इसी समय सुग्रीव, हनुमान, जामवन्त आदि बन्दरों से राम की मैत्री हो गई और इन लोगों ने सीता जी की खोज आरम्भ की। हनुमान सीता जी को ढूंढते हुए लंका पहुंचे। वहाँ पर वे अशोक–वाटिका में सीता जी से मिले और उन्हें आश्वासन देकर लंका को जलाकर रामचन्द्र जी के पास लौट आये। अन्त में राम तथा रावण में भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में रावण परास्त हुआ और मारा गया। राम ने रावण के भई विभीषण को लंका का राजा बना दिया और सीता जी को साथ लेकर चौदह वर्ष के बाद अयोध्या लौट आये। वहाँ पर भरत ने उनका बड़ा स्वागत किया और उनका राज्य उन्हें सौंप दिया। राम अयोध्या के राजा हो गये और शासन करने लगे। चूंकि सीता जी कुछ दिनों तक लंका में थी अतएव उनकी पवित्रता की जांच करने लिये अग्नि–परीक्षा हुई। उसमें वह सफल रही परन्तु फिर भी जनता का संदेह दूर न हुआ। लोक–निन्दा के भय से राम ने सीता जी को निर्वासित कर दिया। सीता जी जंगल में जाकर वाल्मीकि मुनि के आश्रम में रहने लगीं। उस समय सीता जी गर्भवती थीं। वहीं पर मुनि के आश्रम में लव तथा कुश नामक उनके दो पुत्र हुए। जब रामचन्द्र जी ने अश्वमेघ यज्ञ किया तब इन दोनों राजकुमारों ने घोड़े को बांध लिया। फलतः राम से इन दोनों राजकुमारों का भीषण युद्ध हुआ। अन्त में राम ने उन्हें अपना पुत्र तथा उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिया। सीता जी पृथ्वी में समा गईं। इस प्रकार राम की कथा का अन्त होता है।

महाभारत की कथा— महाभारत दो शब्दों के मिलकर बना है अर्थात् महा तथा भारत। हमारे देश में अत्यन्त प्राचीन काल में भरत नाम की एक जाति थी। उस जाति के लोग भारत कहलाते थे। कौरव तथा पाण्डव इसी

भारत वंश के थे। अतएव इन भारतवंशियों के बीच जो युद्ध हुआ वह भारत के नाम से पुकारा गया। चूंकि यह अपने समय का सबसे बड़ा युद्ध था अतएव इसे महासभारत नाम दिया गया। इस प्रकार महाभारत उस ग्रन्थ का नाम है जिसमें कौरवों तथा पांडवों के युद्ध का वर्णन है। भारतवंशी राजा शान्तनु हस्तिनापुर में शासन करते थे। शांतनु के तीन पुत्र थे अर्थात् भीष्म, चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य। भीष्म आजीवन ब्रह्मचारी रहे औश्र चित्रांगद की एक युद्ध में मृत्यु हो गई। अतएव शान्तनु की मृत्यु के बाद विचित्रवीर्य हस्तिनापुर के राजा हुए। विचित्रवीर्य के दो पुत्र थे। बड़े का नाम धृतराष्ट्र और छोटे का पाण्डु। धृतराष्ट्र जन्म के अन्धे थे। अतएव विचित्रवीर्य की मृत्यु के उपरान्त पाडू ही सिहासन पर बैठे। दुर्भाग्यवश पांडु की अकाल मृत्यु हो गई। अतएव विवश होकर धृतराष्ट्र को शासन का कार्य अपने हाथ में ले लेना पड़ा। पाण्डु के पांच पुत्र थे अर्थात् युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल तथा सहदेव, जो पाण्डव कहलाते थे। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे जो कौरव कहलाते थे और जिसमें सबसे बड़ा दुर्योधन था। धृतराष्ट्र ने राजकुमारों को शस्त्र विद्या सिखाने के लिए द्रोणाचार्य नामक ब्राह्मण को रखा जो रण–विद्या में बड़े कुशल थे। शस्त्र विद्या में पाण्डव लोग कौरवों से कहीं अधिक कुशल हो गये, अतएव दुर्योधन उनसे ईर्ष्या करने लगा। युधिष्ठिर अपनी धर्मनिष्ठा तथा अपने सदाचार के कारण धृतराष्ट्र के बड़े प्रिय बन गये। अतएव धृतराष्ट्र ने उन्हीं को युवराज बना दिया। इससे दुर्योधन के क्रोध की सीमा न रही और उसने पाण्डवों के विरुद्ध षड्यंत्र रचना आरम्भ कर दिया। अपनी रक्षा के लिए पाण्डव हस्तिनापुर छोड़कर चले गये और इधर–उधर घूमने लगे। घूमते–घूमते वे पांचाल देश के राजा द्रुपद के यहाँ पहुंचे जिन्होंने अपनी कन्या द्रोपदी का स्ययंबर किया था, अर्जुन धनुर्विद्या में निपुर्ण थे, वे द्रौपदी को प्राप्त करने में सफल हुए परन्तु द्रोपदी सभी भाइयों की पत्नी बन गई। अर्जुन ने मथुरा तथा द्वारिका के राजा कृष्ण की बहिन सुभद्रा के साथ भी अपना विवाह किया। जब घूम फिर के पांडव लोग फिर हस्तिनापुर आये तो उन्होंने अपना आधा राज्य धृतराष्ट्र से मांगा। धृतराष्ट्र ने कौरव राज्य के दक्षिण का प्रदेश पाण्डवों को दे दिया और वहीं पर वे शासन करने लगे। इससे दुर्योधन की ईर्ष्या और बढ़ गई। दुर्योधन ने षड्यंत्र रचा और युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिये बुलवाया। युधिष्ठिर उसके जाल में फंस गये और जुएं में अपना सब कुछ खो बैठे। वे द्रोपदी को भी जुए में हार गये। दुर्योधन ने सभा में द्रोपदी को नग्न करके अपमानित करने का प्रयत्न किया इससे पांडवों को बड़ा दुःख हुआ। इसी समय धृतराष्ट्र ने यह निर्णय किया कि पांडव बारह वर्ष तक बनवास और एक वर्ष तक अज्ञातवास करें। पांडवों ने युद्ध राजा की आज्ञा को स्वीकासर कर लिया और तेरह वर्ष तक इधर–उधर घूमते रहे। तेहर वर्ष के बाद वे वापस आये और दुर्योधन से अपना राज्य मांगा। परन्तु दुर्योधन सुई की नोक भर भी देने के लिए उद्यत न हुआ। कृष्ण ने समझौता कराने का प्रयत्न किया परन्तु वे भी असफल हुए। अन्त में युद्ध अनिवार्य हो गया और कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों तथा पांडवों की सेनाओं में महाभारत का भीषण संग्राम हुआ। इस युद्ध में पांडव की विजय और कौरवों की पराजय हुई। युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा हो गये और बहुत दिनों तक शासन करने के उपरांत अपना राज्य अपने पौत्र परीक्षित को देकर अपने भाइयों तथा द्रौपदी के साथ हिमालय की शरण में चले गये। वास्तव में महा–भारत का युद्ध धर्म तथा अधर्म का युद्ध था और अन्त में धर्म को विजय मिली।

महाकाव्यों की ऐतिहासिकता– अब इस बात पर विचार कर लेना है कि रामायण तथा महाभारत में जिन कथाओं का वर्णन है वे वास्तव में ऐतिहासिक घटनाएं हैं अथवा कवियों के मस्तिष्क की कोरी कल्पनाएं हैं। इस विषय पर विद्वानों में बड़ा मतभेद है। कुछ विद्वान इन्हें ऐतिहासिक ग्रंथ मानते हैं और राम की कथा तथा कौरव–पांडव युद्ध को ऐतिहासिक घटना मानते हैं। इन विद्वानों के विचार में सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा दशरथ तथा राम का अयोध्या में शासन करना ऐतिहासिक सत्य है और यदि राम के देव–स्वरूप को अलग कर दिया जाये तो राम का इक्ष्वाकुवंशीय होना तथा अयोध्या में शासन करना भारतीय परम्परा के अनुकूल है। इसी प्रकार महाभारत के विषय में इन विद्वानों का कहना है कि कुरुवंश एक ऐतिहासिक वंश है और अर्जुन, जन्मेजय, परीक्षित आदि ऐतिहासिक व्यक्ति है, जिनका उल्लेख वैदिक ग्रन्थों में भी मिलता है। इसके अतिरिक्त महाभारत के युद्ध में कौरवों तथा पांडवों के अतिरिक्त अन्य राजाओं ने भी भाग लिया था, जिनका

ऐतिहासिक अस्तित्व है अतएव महाकाव्यों की ऐतिहासिकता में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। परन्तु अनय विद्वान इससे महमत नहीं हैं। उनके विचार में रामायण तथा महाभारत कोरे धार्मिक तथा दार्शनिक ग्रंथ हैं और इनमें प्राचीन हिन्दू–आदर्शों तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। ठीक भी यही प्रतीत होता है। महाकाव्यों की रचना लोक–भाषा सुंस्कृत में की गई है। इसमें स्पष्ट है कि ग्रन्थों का सम्बन्ध जन–साधारण से था जिनकी समझ में वैदिक संस्कृत नहीं आती थी और उन्हीं के कल्याणर के लिए इसकी रचना की गई थी। वास्तव में कवियों ने प्राचीन आदर्श तथा सिद्धान्तों को मानव मुख से इन ग्रंथों में प्रतिपादित किया है जिससे जनसाधारण को उन आदर्शे तथा सिद्धांतों का बोध हो जाय और उनका अनुकरण कर अपना तथा समाज का कल्याण कर सकें। मानव–मुख से प्रतिपादित करने का ध्येय यही प्रतीत होता है कि जनता में विश्वास हो जाय कि यदि इन ग्रंथों में वर्णित मनुष्य अपने को इतना दिव्य बना सकते थे तो हम भी अपने को ऐसा दिव्य बना सकते हैं। ऐतिहासिक पात्रों के चयन करने का यही कारण प्रतीत होता है। रामायण में कवि ने राम का एक आदर्श पुरुष और सीता को एक आदर्श नारी के रूप में कल्पित किया है और सभी प्राचीन आदर्शों को उनमें सन्निहित कर दिया है जिसमें समाज के नर–नारी उन्हीं को आदर्श मानकर उन्ही के अनुसार आचरण करने का प्रयत्न करें। उसमें व्यक्ति तथा समाज दोनों ही का कल्याण निहित था। इसी प्रकार राम तथा रावण का युद्ध उत्तरी भारत के आर्यों तथा दक्षिण भारत के अनार्यों अथवा द्रविड़ों के युद्ध का रूपक मात्र है। राम ने वानरों की सहायता से राक्षसों पर विजय प्राप्त की। इसका केवल यही तात्पर्य है कि उत्तर के पूर्ण सभ्य आर्यों ने अर्द्ध–सीय अनार्यों की सहायता से, जिनमें आर्य सभ्यता का प्रचार हो चुका था, निरे असभ्य अनार्यों को परास्त किया इसी प्रकार कौरवों तथा पांडवों का युद्ध केवल धर्म तथा अधर्म से युद्ध का रूपक मात्र है। युधिष्ठिर धर्म के प्रतीक हैं और दुर्योधन अधर्म का प्रतिरूप है। इस धर्म तथा अधर्म के युद्ध ने कृष्ण जी, जो ईश्वर स्वरूप हैं, धर्म का साथ देते हैं, अधर्म का नहीं। कवि ने इस प्रकार का रूपक बांध कर बात को प्रदर्शित किया हैकि भगवान सदैव धर्म का साथ देते हैं, अधर्म का नहीं। अन्त में धर्म की ही विजय होती है परंतु यह विजय बहुत बड़ी क्षति के उपरांत प्राप्त हुई। यहाँ पर कवि ने यह आदर्श रक्खा है कि क्षति की चिन्ता न करके धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करना चाहिए। जिसमें धर्म के पक्ष वालों को दैवी सहायता प्राप्त होगी और अन्त में धर्म की विजय निश्चित है। यहाँ पर एक बात और ध्यान देने की है। महाभारत का प्रारम्भिक नाम जय–युद्ध है, महाभारत इसका बाद का नाम है। चूंकि धर्म की विजय दिखाना कवि का प्रधान लक्ष्य था अतएव इसे जय–युग कहा गया है। गीता में जो उपदेश दिये गये हैं वे सभी उपनिषदों तथा अन्य ग्रन्थों में मिलते हैं। गीता को दार्शनिक ग्रन्थ नहीं समझना चाहिए। वह केवल एक ध ार्मिक ग्रंथ है। गीता में मोक्ष का बड़ा ही सीधा तथा सरल मार्ग बतलाया गया है जिस पर जन–साधारण भी चल सकते हैं। यह मार्ग भक्ति का है। यज्ञ का सहारा केवल धनवान लोग ले सकते थे, क्योंकि यज्ञ में बड़ा धन व्यय करना पड़ता था। यज्ञ–मार्ग पर केवल बड़े–बड़े विद्वान ही चल सकते थे। परन्तु भक्ति के मार्ग पर साधारण से साधारण व्यक्ति भी चल सकते थे। अतएव सत्य यही प्रतीत होता है कि महाकाव्यों की रचना करने वाले महर्षियों ने प्राचीन आदर्शों का जन–साधारण में प्रचार करने के लिए अपनी कल्पना शक्ति से इन ग्रंथों की रचना की थी। इस पर ऐतिहासिक आवरण डालने का यह कारण था कि यह जन–साधारण के लिए लिखे गये थे। अतएव उनमें विश्वास उत्पन्न करने के लिए ऐसा करना आवश्यक था।

खरबूजा-तरबूज

खरबूजा: खरबूजे का मिजाज गर्म व तर है। यह बदन को मोटा करता है, गुर्दे की इस्लाह करता है, पेशाब खूब लाता है, दूध बढ़ाता है यरकान और जलन्धर में मुफीद है, नहार मुंह खाने से सफरावी बुखार हो सकता है।

तरबूज: तरबूज का मिजाज सर्द व तर है। प्यास को तस्कीन देता है, पेशाब जारी करता है, खून पतला पैदा करता है। बलगम पैदा करता है, गर्मी के बुखार में मुफीद है, शिकंजबीन (लीमू का अरक और शकर) के साथ तरबूज खाना यरकान (कांवर) में मुफीद है। इस का पानी गर्म मिजाज वालों को फरहत (आनन्द) देता है लेकिन नफ्ख़ (पेट फूलना) पैदा करता है और देर में पचता है। जिस रोज़ तरबूज खाएं चावल हरगिज न खाएं। (मखजनुल अद्वियः)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

● बाक्सिंग की दुन्या के बादशाह मुहम्मद अली को संयुक्त राष्ट्र के रीलीफ कामों औश्र नागरिक अधिकरों को बढ़ावा देने के लिए जर्मनी ने शान्ति पुरस्कार से पुरस्कृत किया। यह शान्ति पुरसकार जर्मनी के रसायन शास्त्र विदेश आटोहान की याद में दिया जाता है। बर्लिन मेयर कलाऊज़ वावर्ट ने यह पुरस्कार देने के बाद कहा कि मुहम्मद अली केवल बाक्सिंग चैम्पियन नहीं हैं बल्कि वह शान्ति दूत हैं। यह पुरस्कार हर दो साल बाद दिया जाता है। इस से पहले यह पुरस्कार रूस के राष्ट्रपति मीखाइल. गर्वाचोफ और समून व जनीथल को मिल चुका है इस अवसर पर मौजूद मुहम्मद अली की बीवी ने कहा कि मुहम्मद अलीह ने मुश्किल तरीन हालात में काम किया लेकिन हालात उन पर हावी न हो सके।

● यूरोपीय इस्लामिक इनवेस्ट बैंक शरअी सीमाओं की पाबन्दी के साथ ऐसा पहला बैंक बन गया है जिसे ब्रिटेन में पूंजी निवेश और लोगों को धन जमा करने की इजाजत मिल गई है। ब्रिटेन के फाइनानशियल सर्विसेज अथार्टी की तरफ से इजाज़त दिये जाने के बाद ईआईबी के लिए लन्दन के ए०आई०एम०स्टाक मार्केट में प्ररम्भिक शेयर जारी करने का रास्ता खुल गया है। बैंक के मैंनेजिंग डायरेक्टर जान बागलन ने बताया कि हमारी इच्छा है कि लन्दन स्टाक एक्सचेंज मार्केट में हमारा नाम शीघ्र दर्ज हो जाए। उन्होंने कहा कि बैंक अप्रेल में काम करना शुरू कर देगा और तीन महीने के भीतर स्टाक एक्सचेंज में हमारा नाम दर्ज हो जाने की आशा है। इ०आई०आई० बैंक २००४ में स्थापित किये गए इस्लामिक बैंक आफ बर्लिन के बाद दूसरा बैंक है जिसे एक गैर मुस्लिम देश में पूर्ण इस्लामिक शरअी कानून के साथ कारोबार करने की इजाज़त दी गई है जिस के अनुसार मुसलमानों को न तो सूद लेने और न ही देने की अनुमति है। इसी प्रकार शराब, जूवा औश्र सूद आदि से सम्बन्धित उद्योगों में भी पूंजी निवेश की अनुमति नहीं है। बैंक को आशा है कि उसे मध्यपूर्व के बहुत से ग्राहक मिल जाएंगे जहाँ तेल की कीमतों में इज़ाफे की वजस से पैसे की रेलपेल हो गई है।

ई०आई०आई०बी० के बुनियादी शेयर होल्डरों में खाड़ी देशों की बाज संस्थाएं और लोग तथा इस्लामी बैंक और यूरोप की कुछ कम्पनियाँ शामिल हैं। मिस्टर बैगलन ने बताया कि खाड़ी और एशियाई मार्केट के ऐसे पूंजी निवेशक जो इस्लामी शरीअत के अनुसार पश्चिमी दुन्या में काम करने वाली किसी कम्पनी में पूंजी निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए यह एक अच्छा विकल्प (मुतबादिल) होगा। उन्होंने बताया कि पश्चिम में भी लोगों के अन्दर नैतिक (अखलाक़ी) पूंजी निवेश की ओर रुचि में वृद्धि हो रही है और शरअी कानून की पाबन्दी करने वाले उद्योग ऐसे लोगों के लिए एक बेहतरीन विकल्प हैं। उन्होंने कहा हम खायती फाइनानशियम मार्केट और इस्लामी पूंजी व्यापार के दर्मियान खाई को पाटना चाहते हैं यूरोपियन इस्लामिक इनवेस्टमेंट बैंक ने जनवरी २००५ में ब्रिटेन में अपना रजिस्ट्रेशन कराया था और कारोबार शुरू करने के लिए वित्त विभाग (महकम–ए–मालियात) को अगस्त में नियमानुसार प्रार्थना पत्र दिया था।

● सुनने में भी मदद करेगा चश्मा

नये जमाने के साथ चश्मा भी अब बदल चुका है और दिखाने के साथ सुनाने के काम भी इसने अपने जिम्मे ले लिया है। एक ऐसा चश्मा जो उंचा सुनने वालों के सामाजिक जीवन में बेहतरी का संदेश लेकर आया है। इस चश्मे को बनाया है डेल्फ यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलोजी और बैरियेबल कंपनी ने। खबर के मुताबिक सुनने वाली मशीनें सामान्यतः ऐसी जगहों पर ही ठीक से काम कर पाती हैं, जहां वातावरण में शोर कम होता है। अधिक शोर वाली जगह इसका कोई लाभ नहीं क्योंकि आने वाली हर आवाज को यह उपयोगकर्ता तक पहुंचाती है। कंपनी का कहना है कि यह चश्मा आवाज को सिर्फ उसी दिशा से कैच करता है जिस दिशा से वह आती है। यह शब्दों को तेज करता है। और शोर को धीमा करता है। इस चश्मे में चार माइक्रोफोन होते हैं। यह सभी आपस में जुड़े होते है। यह माइक्रोफोन चश्मे की तीन डंडियों पर लगे होते हैं। ये सभी आवाज को पकड़ने में सक्षम होते हैं।